

लघुत्तरीया प्रश्नोत्तरिका

१. 'अर्थशास्त्रम्' केन विरचितम्?

१। 'अर्थशास्त्रम्' केन विरचितम्?

उत्तरः आचार्येण विष्णुगुप्त—चाणक्य—कौटिल्येन।

उः आचार्येण विष्णुगुप्त-चाणक्य-कौटिल्येन।

१। 'अर्थशास्त्र' धन्तेर रचयिता के?

उः आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य कौटिल्य।

२. अर्थशास्त्रशब्दस्य कोऽर्थः?

२। अर्थशास्त्रशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः अत्र अर्थशब्देन आङ्गलः 'Economics' न वोध्यते। अत्र अर्थः पुरुषार्थः।

धर्मार्थकामाः इति पुरुषार्थत्रयविषयकं शास्त्रम् अर्थशास्त्रम्।

उः अत्र अर्थशब्देन आङ्गलः 'Economics' न वोध्यते। अत्र अर्थः पुरुषार्थः।

धर्मार्थकामाः इति पुरुषार्थत्रयविषयकं शास्त्रम् अर्थशास्त्रम्।

२। 'अर्थशास्त्र' बलते कि बोाय?

उः एখানে 'अर्थ' बलতे इংরেজী Economics কে বোায় না। 'অর্থ' হল এখানে 'পুরুষার্থ'। ধর্ম, অর্থ, কাম — এই ত্রিবগবিধায়ক শাস্ত্র হল অর্থশাস্ত্র।

३. 'कौटिल्यः' इति नाम कथं जातम्?

३। 'कौटिल्यः' इति नाम कर्थं जातम्?

उत्तरः कुटिलराजनीतिशास्त्रस्य प्रयोगात् कौटिल्यः इति नाम जातम्।

उः कুটিলরাজনীতিশাস্ত্রস্য প্রয়োগাত্ কৌটিল্যঃ ইতি নাম জাতম্।

३। 'কৌটিল্য' এই নামকরণের কারণ কি?

উঃ কুটিল রাজনীতিশাস্ত্রের প্রবন্ধা হেতু কৌটিল্য এই নামকরণ।

४. कौटिल्यस्य पितृदत्तं नाम किमस्ति?

४। कौटिल्यস্য পিতৃদত্তং নাম কিমস্তি?

उत्तरः विष्णुगुप्तः।

उः विष्णुगुप्तः।

४। कौटिल्यের पितृদত্ত নাম কি?

উঃ বিষ্ণুগুপ্ত।

৫. কাঁটিলস্য চাণক্যঃ ইতি নাম কথং ভবতি ?

৬। কোটিলস্য চাণক্যঃ ইতি নাম কথং ভবতি ?

উত্তর: কাঁটিল্যঃ চণকবংশীয়ঃ । অথ সঃ চাণক্যঃ ইত্যভিহিতঃ ভবতি ।

উৎ: কোটিল্যঃ চণকবংশীয়ঃ । অথ সঃ চাণক্যঃ ইত্যভিহিতঃ ভবতি ।

৭। কোটিল্যকে 'চাণক্য' বলা হয় কেন ?

উৎ: চণকবংশীয় বলে কোটিল্যকে চাণক্য বলা হয় ।

৮. কাঁটিলস্য জন্মস্থান কিমাসীত् ?

৯। কোটিলস্য জন্মস্থানং কিমাসীৎ ?

উত্তর: তক্ষশিলানগর্যাম্ ।

উৎ: তক্ষশিলানগর্যাম্ ।

১০। কোটিল্যের জন্মস্থান কোথায় ?

উৎ: তক্ষশীলা নগরীতে ।

১১. কাঁটিলীয়ার্থশাস্ত্রস্য উৎসঃ কঃ ভবতি ?

১২। কোটিলীয়ার্থশাস্ত্রস্য উৎসঃ কঃ ভবতি ?

উত্তর: পূর্বাচার্যানাম্ অর্থশাস্ত্রবিষয়কানি শাস্ত্রাণি সমালোচ্য কাঁটিলীয়ার্থশাস্ত্র বিরচিতম্ ।

উৎ: পূর্বাচার্যানাম্ অর্থশাস্ত্রবিষয়কানি শাস্ত্রাণি সমালোচ্য কোটিলীয়ার্থশাস্ত্র বিরচিতম্ ।

১৩। কোটিল্যের অর্থশাস্ত্রের উৎস কি ?

উৎ: পূর্বাচার্যদের অর্থশাস্ত্রবিষয়ক বিবিধ প্রাচ্য পর্যালোচনা করে কোটিল্য তাঁর অর্থশাস্ত্র রচনা করেন ।

১৪. অর্থশাস্ত্রে কিয়ন্ত: অধ্যায়া: সন্তি ?

১৫। অর্থশাস্ত্র কিয়ন্তঃ অধ্যায়া: সন্তি ?

উত্তর: পঞ্চাশতুরঃ শাতসংখ্যকাঃ (১৫০) অধ্যায়া: সন্তি ।

উৎ: পঞ্চাশতুরঃ শাতসংখ্যকাঃ (১৫০) অধ্যায়া: সন্তি ।

১৬। অর্থশাস্ত্রে কয়টি অধ্যায় রয়েছে ?

উৎ: ১৫০টি ।

১৭. অর্থশাস্ত্রে কানি অধিকরণানি সন্তি ?

১৮। অর্থশাস্ত্রে কানি অধিকরণানি সন্তি ?

উত্তর: পঞ্চাশতুরাধিকরণানি ।

উৎ: পঞ্চাশতুরাধিকরণানি ।

১৯। অর্থশাস্ত্রে অধিকরণের সংখ্যা কত ?

উৎ: পঞ্চদশ ।

২০. অর্থশাস্ত্রে কানি প্রকরণানি সন্তি ?

২১। অর্থশাস্ত্রে কানি প্রকরণানি সন্তি ?

উত্তর: অশীত্যুতর শতসংখ্যকানি (১৮০) প্রকরণানি সন্তি ।

উৎ: অশীত্যুতর শতসংখ্যকানি (১৮০) প্রকরণানি সন্তি ।

২২। অর্থশাস্ত্রে কয়টি প্রকরণ রয়েছে ?

উৎ: ১৮০টি ।

২৩। অর্থশাস্ত্রস্য সংকলনবিষয়ে কাঁটিল্যেন কিমুক্তম् ?

২৪। অর্থশাস্ত্রস্য সংকলনবিষয়ে কোটিল্যেন কিমুক্তম্ ?

উত্তর: 'পৃথিব্যাঃ লাখে পালনে চ যাবন্ত্যর্থশাস্ত্রাণি পূর্বাচার্যেঃ প্রস্থাপিতানি প্রায়শস্তানি সংহত্যৈকমিদম্ অর্থশাস্ত্রং কৃতম্' ইতি কাঁটিল্যঃ ।

উৎ: 'পৃথিব্যাঃ লাখে পালনে চ যাবন্ত্যর্থশাস্ত্রাণি পূর্বাচার্যেঃ প্রস্থাপিতানি প্রায়শস্তানি সংহত্যৈকমিদম্র্থশাস্ত্রং কৃতম্' ইতি কোটিল্যঃ ।

২৫। অর্থশাস্ত্রের সংকলন বিষয়ে কোটিল্যের অভিমত কি ?

উৎ: "পৃথিব্যাঃ লাখে পালনে চ যাবন্ত্যর্থশাস্ত্রাণি পূর্বাচার্যেঃ প্রস্থাপিতানি প্রায়শস্তানি সংহত্যৈকমিদম্র্থশাস্ত্রং কৃতম্" ইতি কোটিল্যঃ ।

২৬। কাঁটিল্যস্য আবির্ভাবকালঃ কোটিস্তি ?

২৭। কোটিল্যস্য আবির্ভাবকালঃ কোইত্তি ?

উত্তর: খীষ্টপূর্বঃ চতুর্থশতকঃ ।

উৎ: খীষ্টপূর্বঃ চতুর্থশতকঃ ।

২৮। কোটিল্যের সময়কাল কি ?

উৎ: খীষ্টপূর্বঃ চতুর্থশতকঃ ।

২৯। কাঁটিল্যেন কঃ প্রাচীনঃ ভারতীয়ঃ রাজা যুক্তঃ ?

৩০। কোটিল্যেন কঃ প্রাচীনঃ ভারতীয়ঃ রাজা যুক্তঃ ?

উত্তর: মৌর্যঃ চন্দ্রগুপ্তঃ ।

উৎ: মৌর্যঃ চন্দ্রগুপ্তঃ ।

৩১। কোটিল্য নামের সাথে কোন ভারতীয় রাজা যুক্ত ?

উৎ: মৌর্য চন্দ্রগুপ্ত ।

৩২। অর্থশাস্ত্রস্য প্রথমাধিকরণে কেন নাম্রা পরিচিতম্ ?

১৪। অর্থশাস্ত্ৰস্য প্ৰথমাধিকৰণং কেন নামা পৱিত্ৰিতম्?

উত্তর: 'বিনযাধিকারিকম্' ইতি নামা।

উৎ: 'বিনযাধিকারিকম্' ইতি নামা।

১৪। অর্থশাস্ত্ৰের প্ৰথম অধিকৰণ কি নামে পৱিত্ৰিত।

উৎ: বিনযাধিকারিক।

১৫. অর্থশাস্ত্ৰস্য প্ৰথমাধিকৰণে প্ৰথমপ্ৰকৰণে প্ৰথমাধ্যায়ে ক: বিষয়ঃ আলোচিতঃ?

১৫। অর্থশাস্ত্ৰস্য প্ৰথমাধিকৰণে প্ৰথমপ্ৰকৰণে প্ৰথমাধ্যায়ে কঃ বিষয়ঃ আলোচিতঃ?

উত্তর: রাজবৃত্তিঃ।

উৎ: রাজবৃত্তি।

১৫। অর্থশাস্ত্ৰের প্ৰথমাধিকৰণে প্ৰথমপ্ৰকৰণে প্ৰথমাধ্যায়ের আলোচনায় বিষয় কি?

উৎ: রাজবৃত্তি।

১৬. কাঞ্চামুদ্দিশ্য অর্থশাস্ত্রে কৌটিল্যেন প্ৰণতিঃ নিবেদিতা?

১৬। কাঞ্চামুদ্দিশ্য অর্থশাস্ত্রে কৌটিল্যেন প্ৰণতিঃ নিবেদিতা?

উত্তর: শুক্ৰবৃহস্পতিভ্যাম্।

উৎ: শুক্ৰবৃহস্পতিভ্যাম্।

১৬। অর্থশাস্ত্ৰে আচাৰ্য কৌটিল্য কাদেৱ উদ্দেশ্যে প্ৰণতি নিবেদন কৱেছেন?

উৎ: শুক্ৰাচাৰ্য ও বৃহস্পতিৰ উদ্দেশ্যে।

১৭. অর্থশাস্ত্ৰে কীদৃশং শাস্ত্ৰম्?

১৭। অর্থশাস্ত্ৰে কীদৃশং শাস্ত্ৰম্?

উত্তর: স্মৃতিশাস্ত্ৰে তথা ধৰ্মশাস্ত্ৰম্।

উৎ: স্মৃতিশাস্ত্ৰে তথা ধৰ্মশাস্ত্ৰম্।

১৭। অর্থশাস্ত্ৰে কোন শ্ৰেণীৰ শাস্ত্ৰ?

উৎ: স্মৃতিশাস্ত্ৰে তথা ধৰ্মশাস্ত্ৰ।

১৮. 'বিদ্যাসমুদ্দেশঃ' শব্দেন কি বোধ্যতে?

১৮। 'বিদ্যাসমুদ্দেশঃ' শব্দেন কি বোধ্যতে?

উত্তর: বিদ্যানাং সমুদ্দেশঃ তথা সংগ্ৰহঃ।

উৎ: বিদ্যানাং সমুদ্দেশঃ তথা সংগ্ৰহঃ।

১৮। 'বিদ্যা সমুদ্দেশ' শব্দেৱ অৰ্থ কি?

উৎ: বিদ্যার সমুদ্দেশ তথা সংগ্ৰহ।

১৯. বিদ্যাশব্দস্য কোৱৰ্থঃ?

১৯। বিদ্যাশব্দস্য কোৱৰ্থঃ?

উত্তর: বিদ্ + ব্যপ् + আ = বিদ্যা — সা বিদ্যা যা বিমুক্তয়ে।

উৎ: বিদ্ + ব্যপ্ + আ = বিদ্যা — সা বিদ্যা যা বিমুক্তয়ে।

১৯। 'বিদ্যা' শব্দেৱ অৰ্থ কি?

উৎ: বিদ্ + ব্যপ্ + আ = বিদ্যা, যা আজ্ঞার মুক্তি আনে।

২০. বিদ্যাঃ কতিবিধাঃ ভবন্তি?

২০। বিদ্যাঃ কতিবিধাঃ ভবন্তি?

উত্তর: চতুর্বিধাঃ বিদ্যাঃ।

উৎ: চতুর্বিধাঃ বিদ্যাঃ।

২০। বিদ্যা কত প্ৰকাৰেৱ?

উৎ: চার প্ৰকাৰেৱ।

২১. কা: তা: বিদ্যাঃ ভবন্তি?

২১। কা: তা: বিদ্যাঃ ভবন্তি?

উত্তর: আন্বীক্ষিকী—ত্ৰয়ী—বাৰ্তা—দণ্ডনীতিশ্঵েতি বিদ্যাঃ।

উৎ: আন্বীক্ষিকী-ত্ৰয়ী-বাৰ্তা-দণ্ডনীতিশ্঵েতি বিদ্যাঃ।

২১। কৌটিল্যেৱ মতে বিদ্যা কি কি?

উৎ: আন্বীক্ষিকী, ত্ৰয়ী, বাৰ্তা ও দণ্ডনীতি।

২২. 'মানবাঃ' কে ভবন্তি?

২২। 'মানবাঃ' কে ভবন্তি?

উত্তর: ধৰ্মশাস্ত্ৰকাৰস্য মনোঃ অনুসারিণঃ শাস্ত্ৰকাৰিণঃ মানবাঃ ভবন্তি।

উৎ: ধৰ্মশাস্ত্ৰকাৰস্য মনোঃ অনুসারিণঃ শাস্ত্ৰকাৰিণঃ মানবাঃ ভবন্তি।

২২। 'মানব' পদেৱ দ্বাৱা কাদেৱ বোৰানো হয়েছে?

উৎ: ধৰ্মশাস্ত্ৰকাৰ মনুৱ অনুগামী শিষ্যদেৱ 'মানব' পদেৱ দ্বাৱা বোৰানো হয়েছে।

২৩. মানবাঃ কতি বিদ্যাঃ স্বীকৃত্বন্তি?

২৩। মানবাঃ কতি বিদ্যাঃ স্বীকৃত্বন্তি?

উত্তর: ত্ৰিবিধাঃ—ত্ৰয়ী—বাৰ্তা—দণ্ডনীতিশ্঵েতি।

উৎ: ত্ৰিবিধাঃ—ত্ৰয়ী-বাৰ্তা-দণ্ডনীতিশ্঵েতি।

২৩। মানব সম্প্ৰদায় কয়তি বিদ্যা শীকাৰ কৱেন?

उः तिन्ति — द्वीपी, वार्ता ओ दण्डनीति।
२४. मानवाः आन्वीक्षिकां विद्यारूपेण कथं न स्वीकुर्वन्ति?

२५। मानवाः आधीक्षिकीं विद्यारूपेण कथं न स्वीकुर्वन्ति?
उत्तरः मानवानुसारं आन्वीक्षिकीं त्रयीविशेषा ग्रथं ते आन्वीक्षिकीं स्वतन्त्रविद्यारूपेण न स्वीकुर्वन्ति।

उः मानवानुसारं आधीक्षिकीं त्रयीविशेषा। अथ ते आधीक्षिकीं स्वतन्त्रविद्यारूपेण न स्वीकुर्वन्ति।

२६। आधीक्षिकीके मानवसम्प्रदाय विद्यारूपे स्वीकार करेन ना केन?
उः मानवसम्प्रदाय मने करे आधीक्षिकी कोन स्वतन्त्र विद्या नय, इहा त्रयीर विशेषण।

२७. 'वार्हस्पत्याः' के भवन्ति?
२८। 'वार्हस्पत्याः' के भवति?

उत्तरः आचार्यस्य वृहस्पतेः अनुसारिणः राजनीतिविदः वार्हस्पत्याः।

उः आचार्य वृहस्पतेः अनुसारिणः राजनीतिविदः वार्हस्पत्याः।

२९। 'वार्हस्पत्याः' के?
उः आचार्य वृहस्पतिर अनुग्रामीगण वार्हस्पत्य नामे परिचित।

३०. वार्हस्पत्याः कतिविधे विद्ये स्वीकुर्वन्ति?

३१। वार्हस्पत्याः कतिविधे विद्ये स्वीकुर्वन्ति?

उत्तरः द्विविधे विद्ये—वार्ता दण्डनीतिश्वेति।

उः द्विविधे विद्ये — वार्ता दण्डनीतिश्वेति।

३२. वार्हस्पत्याः कर्यात्मक विद्या स्वीकार करेन?

उः दूषि विद्या — वार्ता ओ दण्डनीति।

३३. वार्हस्पत्याः त्रयी विद्यारूपेण कथं न स्वीकुर्वन्ति?

३४। वार्हस्पत्याः त्रयी विद्यारूपेण कथं न स्वीकुर्वन्ति?

उत्तरः वार्हस्पत्याः मन्यन्ते त्रयी लोकयात्राविदः संवरणमात्रम्। ग्रथं ते त्रयी पृथक् विद्यारूपेण न स्वीकुर्वन्ति।

उः वार्हस्पत्याः मन्यन्ते त्रयी लोकयात्राविदः संवरणमात्रम्। अथ ते त्रयी पृथक् विद्यारूपेण न स्वीकुर्वन्ति।

३५। वार्हस्पत्याः त्रयीके विद्यारूपे स्वीकार करेन ना केन?

उः वार्हस्पत्याः त्रयी लोकयात्राविदिग्नेन पक्षेन आभरणमवृप। ताइ इहा कोन स्वतन्त्र विद्या नय।

३६. 'ओशनसाः' के भवन्ति?

३७। 'ओशनसाः' के भवति?

उत्तरः शुक्राचार्यस्य अनुग्रामिनः राजनीतिशास्त्रकाराः ओशनसाः भवन्ति।

उः शुक्राचार्यस्य अनुग्रामिनः राजनीतिशास्त्रकाराः ओशनसाः भवति।

३८। ओशनस् कारा?

उः शुक्राचार्येर अनुग्रामी राजनीतिशास्त्रविद्गण ओशनस् नामे परिचित।

३९. ओशनसानुसारं विद्या का भवति?

४०। ओशनसानुसारं विद्या का भवति?

उत्तरः ओशनसाः केवलं दण्डनीतिं विद्यारूपेण स्वीकुर्वन्ति।

उः ओशनसाः केवलं दण्डनीतिं विद्यारूपेण स्वीकुर्वन्ति।

४१। ओशनसंगण कर्याति ओ कि विद्या स्वीकार करेन?

उः एकटिमात्र — दण्डनीति।

४२. ओशनसाः कथम् अन्यत् विद्याः न स्वीकुर्वन्ति?

४३। ओशनसाः कथम् अन्याः विद्याः न स्वीकुर्वन्ति?

उत्तरः ओशनसाः मन्यन्ते दण्डनीत्यां सर्वासां विद्यानाम् आरम्भः प्रतिवद्धः अस्ति।

उः ओशनसाः मन्यन्ते दण्डनीत्याः सर्वासाः विद्यानाम् आरम्भः प्रतिवद्धः अस्ति।

४४। ओशनसंगण केन अन्य विद्या स्वीकार करेन ना?

उः तीरा मने करेन दण्डनीतिर मध्येऽ सकल विद्यार सूचना निहित रम्येहे।

४५. विद्यासंख्याविषये कौटिल्यस्य अभिमतं किमस्ति?

४६। विद्यासंख्याविषये कौटिल्यस्य अभिमतः किमस्ति?

उत्तरः कौटिल्यः मन्यते आन्वीक्षिकी—त्रयी—वार्ता—दण्डनीतिः सर्वाः विद्याः एव।

उः कौटिल्यः मन्यते आधीक्षिकी-त्रयी-वार्ता-दण्डनीतिः सर्वाः विद्याः एव।

४७। विद्यार संख्या विषये कौटिल्येर अभिमत कि?

उः आधीक्षिकी, त्रयी, वार्ता ओ दण्डनीति — ऐ चाराटिकै आचार्य कौटिल्य विद्यारूपे स्वीकार करेन।

४८. आन्वीक्षिकी का भवति?

४९। आधीक्षिकी का भवति?

उत्तरः सांख्यं योगं लोकायतं हि आन्वीक्षिकी।

उः सांख्यं योगं लोकायतं हि आधीक्षिकी।

- ३२। आसीक्षिकी कि?
- उः सांख्य, योग ओ लोकायत — ऐ तिनाचि
- ३३। आन्वीक्षिकीशब्दस्य बृहपतिः का भवति?
- उत्तरः अनु + ईक्ष = अन्वीक्षा। अन्वीक्षा + प्लिक् + डीप् = आन्वीक्षिकी।
- ३४। अनु + ईक्ष = अन्वीक्षा। अन्वीक्षा + प्लिक् + डीप् = आसीक्षिकी।
- ३५। आसीक्षिकी शब्देर बृहपतिः कि?
- उः अनु + ईक्ष = अन्वीक्षा। अन्वीक्षा + प्लिक् + डीप् = आसीक्षिकी।
- ३६। सांख्यं किम्?
- ३७। सांख्यां किम्?
- उत्तरः महर्षिणा कपिलेन प्रणीतं दर्शनं सांख्यम्।
- उः महर्षिणा कपिलेन प्रणीतं दर्शनं सांख्यम्।
- ३८। सांख्य कि?
- उः महर्षिं कपिलं प्रणीतं पञ्चविश्वातितद्वयुक्तं दर्शनं सांख्यदर्शन।
- ३९। योगं किम्?
- ४०। योगं किम्?
- उत्तरः महर्षिणा पतञ्जलिना प्रणीतं दर्शनं योगम्।
- उः महर्षिणा पतञ्जलिना प्रणीतं दर्शनं योगम्।
- ४१। योग कि?
- उः महर्षिं पतञ्जलिं प्रणीतं दर्शनं योगदर्शन।
- ४२। लोकायतं किम्?
- उत्तरः लोकेषु आयतम्, साधारणेषु समादृतं चार्वाक दर्शनं लोकायतम्।
- उः लोकेषु आयतम्, साधारणेषु समादृतं चार्वाक दर्शनं लोकायतम्।
- ४३। लोकायत कि?
- उः 'लोकेषु आयतम्' — साधारण मानुषेर काछे समादृत चार्वाक दर्शनं हलो लोकायत दर्शन।
- ४४। 'त्रयी' विद्या का भवति?
- ४५। 'त्रयी' विद्या का भवति?
- उत्तरः त्रक्—साम—यजुः—ग्रथवः, इतिहासवेदः, पठवेदाङ्गानि त्रयी।

- ४६। खाक्-साम-यजुः-ग्रथवः, इतिहासवेदः, वड्नेदाङ्गानि त्रयी।
- ४७। त्रयीविद्या कि?
- उः खाक्-साम-यजुरं पाशापाशि अर्थवेद, इतिहास वेद ओ छय बेदाङ्ग त्रयी शब्दे वोध।
- ४८। वार्ता का भवति?
- ४९। वार्ता का भवति?
- उत्तरः कृषि—पाशुपाल्पे—वणिज्या च वार्ता।
- उः कृषि-पाशुपाल्पे-वणिज्या च वार्ता।
- ५०। वार्ता कि?
- उः कृषि, पशुपालन ओ वाणिज्य विद्या हलो वार्ता।
- ५१। दण्डनीतिः का भवति?
- उत्तरः राष्ट्रशासनपद्धतिः।
- उः राष्ट्रशासनपद्धतिः।
- ५२। दण्डनीति कि?
- उः राज्यशासनपद्धति।
- ५३। त्रयीविद्यायाः विषयः कः भवति?
- ५४। त्रयीविद्यायाः विषयः कः भवति?
- उत्तरः धर्माधर्मी।
- उः धर्माधर्मी।
- ५५। त्रयीविद्यायार विषय कि?
- उः धर्म एवं अधर्म।
- ५६। वार्ताविद्यायाः विषयः कः भवति?
- ५७। वार्ताविद्यायाः विषयः कः भवति?
- उत्तरः अर्थानथौ।
- उः अर्थानथौ।
- ५८। वार्ताविद्यायार विषय कि?
- उः अर्थ एवं अनर्थ।
- ५९। दण्डनीतिविद्यायाः विषयः कः भवति?
- ६०। दण्डनीतिविद्यायाः विषयः कः भवति?

কোটিলীয়ন্ অর্থশাস্ত্র

২৭২

উত্তর: নয়াপনয়ো ।

উঃ নয়াপনয়ো ।

৪২। দণ্ডনীতির বিষয় কি?

উঃ নয় ও অপনয় ।

৪৩. আন্বীক্ষিকীবিদ্যাঃ বিষয়ঃ ক: ভবতি?

৪৩। আন্বীক্ষিকীবিদ্যাঃ বিষয়ঃ কঃ ভবতি?

৪৩। আন্বীক্ষিকীবিদ্যাঃ যৌক্তিকতাং প্রতিপাদযতি আন্বীক্ষিকী।

উত্তর: ত্রয়ী—বার্তা—দণ্ডনীতিবিদ্যানাং যৌক্তিকতাং প্রতিপাদযতি আন্বীক্ষিকী।

উঃ ত্রয়ী—বার্তা—দণ্ডনীতিবিদ্যার বিষয় কি?

৪৩। আন্বীক্ষিকীবিদ্যার যৌক্তিকতা প্রতিপাদন করা।

উঃ ত্রয়ী, বার্তা ও দণ্ডনীতির যৌক্তিকতা প্রতিপাদন করা?

৪৪. আন্বীক্ষিকীবিদ্যাঃ উপযোগিতা কা ভবতি?

৪৪। আন্বীক্ষিকীবিদ্যার উপযোগিতা কি?

উঃ আন্বীক্ষিকী ত্রয়ী, বার্তা ও দণ্ডনীতির যৌক্তিকতা প্রতিপাদনের দ্বারা মানুষের উপকার করে, ব্যবহার ও অভ্যন্তরে বুদ্ধিকে স্থির রাখে, মানুষকে প্রজ্ঞা, বাক ও কর্মে বিশারদ করে তোলে।

৪৫. আন্বীক্ষিকী সর্ববিদ্যানাং কি ভবতি?

৪৫। আন্বীক্ষিকী সর্ববিদ্যানাং কি ভবতি?

উত্তর: প্রদীপস্বরূপ।

উঃ প্রদীপস্বরূপ।

৪৫। আন্বীক্ষিকী সকল বিদ্যার কি?

উঃ প্রদীপস্বরূপ।

৪৫. আন্বীক্ষিকী সর্বকর্মণাং কি ভবতি?

৪৫। আন্বীক্ষিকী সর্বকর্মণাং কি ভবতি?

উত্তর: উপায়স্বরূপ।

উঃ উপায়স্বরূপ।

৪৬। আন্বীক্ষিকী সকল কর্মের কি হয়?

উঃ উপায়স্বরূপ।

৪৭. আন্বীক্ষিকী সর্বধর্মাণাং কি ভবতি?

৪৭। আন্বীক্ষিকী সর্বধর্মাণাং কি ভবতি?

উত্তর: আশ্রয়স্বরূপ।

উঃ আশ্রয়স্বরূপ।

৪৮। সকল ধর্মের ক্ষেত্রে আন্বীক্ষিকী কি হয়?

উঃ আশ্রয়স্বরূপ।

৪৮। ত্রয়ী বিদ্যায় উপযোগিতা কা ভবতি?

৪৮। ত্রয়ী বিদ্যায় উপযোগিতা কা ভবতি?

উত্তর: ত্রয়ী চতুর্বর্ণানাম্ চতুরাশ্রমানাঞ্চ স্঵ধর্মম্ গ্রবস্থাপযতি।

উঃ ত্রয়ী চতুর্বর্ণানাম্ চতুরাশ্রমানাঞ্চ স্বধর্ম অবস্থাপযতি।

৪৮। ত্রয়ীবিদ্যার উপযোগিতা কোথায়?

উঃ ত্রয়ী চতুর্বর্ণ ও চতুরাশ্রমের স্বধর্ম স্থাপন করে।

৪৯. চতুর্বর্ণাঃ কে ভবন্তি?

৪৯। চতুর্বর্ণাঃ কে ভবন্তি?

উত্তর: গ্রাহণ—ক্ষত্রিয়—বৈশ্য—শূদ্রাঃ চতুর্বর্ণাঃ।

উঃ গ্রাহণ-ক্ষত্রিয়-বৈশ্য-শূদ্রাঃ চতুর্বর্ণাঃ।

৫০। চতুর্বর্ণ কি কি?

উঃ গ্রাহণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র।

৫০. চতুরাশ্রমাঃ কে ভবন্তি?

৫০। চতুরাশ্রমাঃ কে ভবন্তি?

উত্তর: ব্রহ্মচর্য—গার্হস্থ্য—বানপ্রস্থ—সম্যাসাশ চতুরাশ্রমাঃ।

উঃ ব্রহ্মচর্য-গার্হস্থ্য-বানপ্রস্থ-সম্যাসাশ চতুরাশ্রমাঃ।

৫০। চতুরাশ্রম কি কি?

উঃ ব্রহ্মচর্য, গার্হস্থ্য, বানপ্রস্থ ও সম্যাস।

৫১. গ্রাহণস্য স্বধর্মঃ কোত্তি?

৫১। গ্রাহণস্য স্বধর্মঃ কোত্তি?

অর্থশাস্ত্র-18

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

२१४

उत्तरः ग्रध्ययनं ग्रध्यापनं यजनं यजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति ब्राह्मणस्य स्वधर्मः।

उः अध्ययनं अध्यापनं यजनं यजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति ब्राह्मणस्य स्वधर्मः।

५१। ब्राह्मणेर स्वधर्म कि?

अध्ययन, अध्यापना, यजन, यजन ओ दान ग्रहणेर स्वधर्म।

५२. क्षत्रियस्य स्वधर्मः कोऽस्ति?

५२। क्षत्रियस्य स्वधर्मः कोइति?

उत्तरः ग्रध्ययनं यजनं दानं शस्त्रजीविका भूतरक्षणश्च क्षत्रियस्य स्वधर्मः।

उः अध्ययनं यजनं दानं शस्त्रजीविका भूतरक्षणश्च क्षत्रियस्य स्वधर्मः।

५२। क्षत्रियेर स्वधर्म कि?

अध्ययन, यजन, दान, शस्त्रजीविका ओ प्रजापालन।

५३. वैश्यस्य स्वधर्मः कोऽस्ति?

५३। वैश्यस्य स्वधर्मः कोइति?

उत्तरः ग्रध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वणिज्या च वैश्यस्य स्वधर्मः।

उः अध्ययनं यजनं दानं कृषिपाशुपाल्ये वणिज्या च वैश्यस्य स्वधर्मः।

५४। वैश्येर स्वधर्म कि?

उः अध्ययन, यजन, दान, कृषि, पशुपालन ओ वाणिज्य।

५४। शूद्रस्य स्वधर्मः कोऽस्ति?

५४। शूद्रस्य स्वधर्मः कोइति?

उत्तरः द्विजातिशुश्रूपा वार्ता कारकुशीलवकर्म च शूद्रस्य स्वधर्मः।

उः द्विजातिशुश्रूपा वार्ता कारकुशीलवकर्म च शूद्रस्य स्वधर्मः।

५५। शूद्रेर स्वधर्म कि?

उः द्विजातिशुश्रूपा, वार्ता, कारकुशीलवकर्म।

५५। 'द्विजाति' शब्देन के बोध्यन्ते?

उत्तरः ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्यश्च द्विजातिशब्देन बोध्यन्ते।

उः ब्राह्म-क्षत्रिय-वैश्यश्च द्विजातिशब्देन बोध्यन्ते।

५५। द्विजाति शब्देर द्वारा कादेर बोधानो हयोऽते?

उः ब्राह्म, क्षत्रिय ओ वैश्य।

५६. 'स्वाध्यायः' किम्?

५६। 'स्वाध्यायः' किम्?

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

२१५

उत्तरः स्वशाखानिर्दिष्टं वेदाध्ययनं स्वाध्यायः।

उः अशाखानिर्दिष्टं वेदाध्ययनं स्वाध्यायः।

५६। स्वाध्याय कि?

उः निजाशाखा निर्दिष्ट वेदाध्ययन।

५७. धर्मशब्दस्य कोऽर्थः?

५७। धर्मशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः धृ— धातुनिष्पण्णः धर्मशब्दः कर्तव्यार्थं गृहीतः। 'धारणात् धर्मः'

उः धृ धातुनिष्पण्णः धर्मशब्दः कर्तव्यार्थं गृहीतः। 'धारणात् धर्मः'

५८। 'धर्म' शब्देर अर्थ कि?

उः धृ- धातु निष्पण्ण धर्मशब्देर अर्थ कर्तव्य।

५८। इतिहासवेदः कोऽस्ति?

५८। इतिहासवेदः कोइति?

उत्तरः महाभारतम्।

उः महाभारतम्।

५९। इतिहास वेद कि?

उः महाभारत।

५९. वेदाङ्गानि कानि भवन्ति?

५९। वेदाङ्गानि कानि भवन्ति?

उत्तरः शिक्षा—कल्प—निरुक्त—व्याकरणम्—छन्दः—ज्योतिषम् वेदाङ्गानि।

उः शिक्षा-कल्प-निरुक्त-व्याकरणम्-छन्दः-ज्योतिषम् वेदाङ्गानि।

६०। वेदाङ्गसमूह कि कि?

उः शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण ओ ज्योतिष।

६०. कुशीलवकर्म किम्?

६०। कुशीलवकर्म किम्?

उत्तरः अभिनयं गीतनृत्यवाद्यादि नान्दनिकशिल्पं कुशीलवकर्म।

उः अभिनय, गीतनृत्यवाद्यादि नान्दनिकशिल्पं कुशीलवकर्म।

६०। कुशीलवकर्म कि?

उः अभिनय, गीतनृत्यवाद्यादि नान्दनिक कर्म।

६१. कारुकर्म कि भवति?

६१। कारुकर्म कि भवति?

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

२७६

उत्तरः वेत्रकाष्ठादिधिः निर्मितं शिल्पं कारुकर्म ।

उः वेत्रकाष्ठादिभिः निर्मितं शिल्पं कारुकर्म ।

६१। कारुकर्म कि?

उः काठ, वाँश ओ वेत्रे निर्मित शिल्पकर्म ।

६२. निरुक्तं किम्?

६३। निरुक्तं किम्?

उत्तरः पदसाधनविधिः निरुक्तम् ।

उः पदसाधनविधिं निरुक्तम् ।

६४। निरुक्तं कि?

उः पदसाधन विधि ।

६५। गृहस्थस्य स्वधर्मः कः भवति?

उत्तरः स्वर्वर्णविहितकर्मणा जीविकानवाहं स्वर्वर्णया भिन्नगोत्रीयया कन्यया सह विवाहवन्धनं, सन्तानोत्पादनं, देवता पित्र्यतिथिभृत्यानां भोजनात् सह विवाहवन्धनं, परं भुक्ताविशिष्टं ग्रहणं गृहस्थस्य स्वधर्मः ।

उः स्वर्वर्णविहितकर्मणा जीविकानवाहं स्वर्वर्णया भिन्नगोत्रीयया कन्याया सह विवाहवन्धनं, सन्तानोत्पादनं, देवता पित्र्यतिथिभृत्यानां भोजनात् परं भुक्ताविशिष्टं ग्रहणं गृहस्थस्य स्वधर्मः ।

६६। गृहस्थेर ऋथर्मः कि?

उः निजवर्णेर विहित कर्मेर द्वारा जीविका निर्वाह, स्वर्वर्णेर अथाच भिन्नगोत्रिया कन्याके विवाह, सन्तानोत्पादन, देवता, पितृपूरुष, अतिथि ओ परिवारस्य वाङ्किवर्गेर भोजनात्पेते भोजनं प्रहण ।

६७। ब्रह्मचारिणः स्वधर्मः कः भवति?

उः ब्रह्मचारिणः स्वधर्मः कः भवति?

उत्तरः स्वाध्यायः, होम सम्पादनं, भिक्षाव्रतत्वं आचार्ये गुरुपुत्रे स्वब्रह्मचारिणि वा

आचार्यीये वा आचार्यीये गुरुपुत्रे स्वब्रह्मचारिणि वा प्राणान्तिकी वृत्तिः ब्रह्मचारिणः स्वधर्मः ।

६८। ब्रह्मचारीर ऋथर्मः कि?

उः ब्रह्मचारीर ऋथर्मः हलो — स्वाध्याय, भिक्षाव्रत, एवं आचार्य, गुरुपुत्र वा स्वब्रह्मचारीर

निकटे प्राणान्तिकी वृत्तिः ।

६५. वाणप्रस्थस्य स्वधर्मः कोऽस्ति?

६६। वानप्रस्थस्य स्वधर्मः कोइति?

उत्तरः ब्रह्मचर्यं भूमौ शयनं जटाजिनधारणं होमकार्यं देवतापित्र्यातिथिपूजनं वन्यफलमूलाहारश्च वानप्रस्थस्य स्वधर्मः ।

उः ब्राह्मचर्यं भूमौ शयनं जटाजिनधारणं होमकार्यं देवतापित्र्यातिथिपूजनं वन्यफलमूलाहारश्च वानप्रस्थस्य स्वधर्मः ।

६७। वानप्रस्थेर स्वधर्म कि?

उः ब्राह्मचर्य, भूमिशया, जटा ओ अजिनधारण, होम सम्पादन, देवता, पितृपूरुष ओ अतिथिपूजन एवं बन्य फलमूल आहार ।

६८. परिव्राजकस्य स्वधर्मः कः भवति?

६९। परिव्राजकस्य स्वधर्मः कः भवति?

उत्तरः इन्द्रियसंयमं, अनारप्त्यः निष्क्रिङ्गनत्वं, सङ्कल्पत्यागः भिक्षाव्रतं, अनेकात्रारण्यवासः, वाहाभ्यन्तरशौचम्, अहिंसा, सत्यं असूया, अनृशंसं क्षमा चा परिव्राजकस्य स्वधर्मः ।

उः इन्द्रियसंयमं, अनारप्त्यः निष्क्रिङ्गनत्वं, सङ्कल्पत्यागः भिक्षाव्रतं, अनेकात्रारण्यवासः, वाहाभ्यन्तरशौचम्, अहिंसा, सत्यं, असूया, अनृशंसं क्षमा चा परिव्राजकस्य स्वधर्मः ।

७०। परिव्राजकेर स्वधर्म कि?

उः इन्द्रिय संयम, अनासन्ति, सङ्कल्पत्य, एकस्थाने वेशी दिन ना थाका, वाहाभ्यन्तर शुचिता, अहिंसा, सत्य, असूया, अनृशंस आचरण ओ क्षमा प्रदर्शन परिव्राजकेर स्वधर्म ।

७१। 'प्राणान्तिकी वृत्तिः' का भवति?

उत्तरः नैष्ठिकब्रह्मचारीरूपेण आजीवनं गुरुगृहे अवस्थानं प्राणान्तिकी वृत्तिः ।

उः नैष्ठिकब्रह्मचारीरूपेण आजीवनं गुरुगृहे अवस्थानं प्राणान्तिकी वृत्तिः ।

७२। प्राणान्तिकी वृत्ति कि?

उः नैष्ठिक ब्रह्मचारीरूपे आजीवन गुरु गृहे अवस्थान ।

७३। अनारम्भशब्दस्य कोऽर्थः?

७४। अनारम्भकस्य कोइर्थः?

उत्तरः सकामकर्मसु अप्रवृत्तिः अनारम्भः ।

उः सकामकर्मसु अप्रवृत्तिः अनारम्भः ।

६८। अनारम्भ कि?

उः सकामकर्मसु अप्रवृत्तिः ।

६९. निष्कञ्चनत्वं किम्?

७०। निष्कञ्चनत्वं किम्?

उत्तरः वित्तेषु अधिकारवर्जनं निष्कञ्चनत्वम् ।

उः वित्तेषु अधिकारवर्जनं निष्कञ्चनत्वम् ।

७१। निष्कञ्चनत्वं कि?

उः सम्पदे अधिकारवर्जन ।

७०. कीदृशी कन्या गृहस्थेन विवाह्या?

७१। कीदृशी कन्या गृहस्थेन विवाह्या?

उत्तरः सर्वाणि असगोत्रीया च कन्या ।

उः सर्वाणि असगोत्रीया च कन्या ।

७०। किरकम कन्या गृहस्थेर पक्षे विवाहयोग्या?

उः सर्वाणि ओ डिगोत्रीया ।

७१. आचार्यमन्तरेण प्राणान्तिकीवृत्तिः केषु अवलम्बनीया?

७१। आचार्यमन्तरेण प्राणान्तिकीवृत्तिः केषु अवलम्बनीया?

उत्तरः गुरुपुत्रेषु सत्रघाचारिषु वा ।

उः गुरुपुत्रेषु सत्रघाचारिषु वा ।

७१। आचार्याभिन्न आरू कादेव नाथे प्राणान्तिकीवृत्ति अवलम्बन करा याय?

उः गुरुपुत्र वा सतीर्थ उपचारीव नाथे ।

७२. 'जटाजिनः' केन आश्रमेन सम्बन्धितः?

७२। 'जटाजिनः' केन आश्रमेन सम्बन्धितः?

उत्तरः वानप्रस्थाश्रमेन ।

उः वानप्रस्थाश्रमेन ।

७२। जटा ओ अजिन कोन आश्रमेर नाथे सम्पृक्त?

उः वानप्रस्थाश्रमेर नाथे ।

७३. स्वधर्मपालनस्य उपयोगिता का भवति?

७३। स्वधर्मपालनस्य उपयोगिता का भवति?

उत्तरः स्वधर्मः अनन्ताय स्वार्य भवति ।

उः स्वधर्मः अनन्ताय स्वार्य भवति ।

७३। स्वधर्म पालनेर उपयोगिता कि?

उः स्वधर्मपालन अनुष्ठ अर्थेर कारण

७४. स्वधर्मस्य अपालने कि भवति?

७४। स्वधर्मस्य अपालने कि भवति?

उत्तरः स्वधर्मस्य अपालने लोकः वर्णसङ्करात् कर्मसङ्करात् च उच्छिद्यते ।

उः स्वधर्मस्य अपालने लोकः वर्णसङ्करात् कर्मसङ्करात् च उच्छिद्यते ।

७४। स्वधर्म पालन ना करले कि हय?

उः वर्णसंकर ओ कर्मसंकर जनित कारणे विनाश घटे ।

७५। वर्णसंकरः कथं जायते?

७५। वर्णसंकरः कथं जायते?

उत्तरः वर्णव्यवस्थायाः विपर्यात् वर्णसंकरः जायते ।

उः वर्णव्यवस्थायाः विपर्यात् वर्णसंकरः जायते ।

७५। वर्णसाङ्कर्य कथन हय?

उः वर्णव्यवस्थार विपर्यात् हय.

७६. कर्मसंकरः कथं जायते?

७६। कर्मसंकरः कथं जायते?

उत्तरः आश्रमव्यवस्थायाः विपर्यात् कर्मसंकरः जायते ।

उः आश्रमव्यवस्थायाः विपर्यात् कर्मसंकरः जायते ।

७६। कर्मसाङ्कर्य कथन हय?

उः आश्रमव्यवस्थार विपर्याये ।

७७. वार्ताविद्यायाः उपयोगिता का भवति?

७७। वार्ताविद्यायाः उपयोगिता का भवति?

उत्तरः धान्यपशुहिरण्यकुप्यविष्टि प्रदानात् वार्ता औपकारिकी ।

उः धान्यपशुहिरण्यकुप्यविष्टि प्रदानात् वार्ता औपकारिकी ।

७७। वार्ताविद्यार उपयोगिता कि?

उः धान्य-पशु-सुर्व-रजत प्रडृति सम्पदेर वृद्धि ।

७८. दण्डस्य मुख्या उपयोगिता का भवति?

७८। दण्डस्य मुख्या उपयोगिता का भवति?

উত্তর: আন্বীক্ষিকী—ত্রয়ী—বার্তানাং যোগক্ষেত্রে সাধ্যতি দণ্ডনীতিঃ।

উঁঁ: আন্বীক্ষিকী-ত্রয়ী-বার্তানাং যোগক্ষেত্রে সাধ্যতি দণ্ডনীতিঃ।

৭৮। দঙ্গের মুখ্য উপযোগিতা কোথায়?

উঁঁ: দঙ্গ আন্বীক্ষিকী, ত্রয়ী ও বার্তার যোগক্ষেত্রে সাধন করে।

৭৯. যোগক্ষেত্রস্বত্বস্য কোর্ত্তুঃ?

৮০। যোগক্ষেত্রস্বত্বস্য কোর্ত্তুঃ?

উত্তর: অলভ্যস্য লাভঃ যোগঃ, লভ্যবস্তুনঃ সংরক্ষণঃ ক্ষেমম্।

উঁঁ: অলভ্যস্য লাভঃ যোগঃ, লভ্যবস্তুনঃ সংরক্ষণঃ ক্ষেমম্।

৮১। যোগক্ষেত্র শব্দের অর্থ কি?

উঁঁ: অলভ্যবস্তুর প্রাণী যোগ, আর প্রাণু বস্তুর সংরক্ষণ ক্ষেম।

৮০. প্রজানাং সর্বশ্রেষ্ঠঃ বশীকরণোপায়ঃ কোর্ত্তুঃ?

৮১। প্রজানাং সর্বশ্রেষ্ঠঃ বশীকরণোপায়ঃ কোর্ত্তুঃ?

উত্তর: দণ্ডঃ।

উঁঁ: দঙ্গঃ।

৮২। দণ্ডস্য কিয়ন্তঃ বিভাগাঃ কোটিল্যেন স্বীকৃতঃ?

৮৩। দঙ্গ কিয়ন্তঃ বিভাগাঃ কোটিল্যেন স্বীকৃতঃ?

উত্তর: ত্রয়ঃ বিভাগাঃ—তীক্ষ্ণদণ্ডঃ, মৃদুদণ্ডঃ, যথার্থদণ্ডশ্চ।

উঁঁ: ত্রয়ঃ বিভাগাঃ— তীক্ষ্ণদণ্ডঃ, মৃদুদণ্ডঃ, যথার্থদণ্ডশ্চ।

৮৪। কোটিল্য দঙ্গের কয়টি ও কি কি বিভাগ স্বীকার করেন?

উঁঁ: তিনটি— তীক্ষ্ণ, কঠোর ও মৃদু।

৮৫. কেন দণ্ডেণ প্রজাঃ ভদ্রিগ্নাঃ ভবন্তি?

৮৬। কেন দঙ্গেণ প্রজাঃ উদ্বিঘ্নাঃ ভবন্তি?

উত্তর: তীক্ষ্ণদণ্ডেণ।

উঁঁ: তীক্ষ্ণদণ্ডেণ।

৮৭। কোন দঙ্গ প্রয়োগে প্রজাগণ উদ্বিঘ্ন হন?

উঁঁ: তীক্ষ্ণদণ্ড প্রয়োগে।

৮৮. কশ্চ দণ্ডঃ পরাভূতঃ ভবতি?

৮৯। কশ্চ দঙ্গঃ পরাভূতঃ ভবতি?

উত্তর: মৃদুদণ্ডঃ।

উঁঁ: মৃদুদণ্ডঃ।

৮৩। কোন দঙ্গ পরাভূত হয়?

উঁঁ: মৃদুদণ্ড।

৮৪. কশ্চ দণ্ডঃ পূজ্যঃ ভবতি?

৮৫। কশ্চ দঙ্গঃ পূজ্যঃ ভবতি?

উত্তর: যথার্থদণ্ডঃ।

উঁঁ: যথার্থদণ্ডঃ।

৮৬। কোন দঙ্গ পূজিত হয়?

উঁঁ: যথার্থ দঙ্গ।

৮৭। ত্রিবর্গশাল্বেন কিং বোধ্যতে?

৮৮। ত্রিবর্গশেনেন কিং বোধ্যতে?

উত্তর: ধর্মার্থাকামাঃ ত্রিবর্গঃ।

উঁঁ: ধর্মার্থাকামাঃ ত্রিবর্গঃ।

৮৯। ত্রিবর্গ কি?

উঁঁ: ধর্ম, অর্থ ও কাম।

৯০. প্রজাঃ কদা ত্রিবর্গেন বর্ধন্তে?

৯১। প্রজাঃ কদা ত্রিবর্গেন বর্ধন্তে?

উত্তর: দণ্ডঃ যদা সুবিজ্ঞাতরূপেণ প্রযুক্তঃ ভবতি তদা প্রজাঃ ত্রিবর্গেন বর্ধন্তে।

উঁঁ: দঙ্গঃ যদা সুবিজ্ঞাতরূপেণ প্রযুক্তঃ ভবতি তদা প্রজাঃ ত্রিবর্গেন বর্ধন্তে।

৯২। প্রজাগণ কখন ত্রিবর্গের সুফল লাভ করেন?

উঁঁ: সুবিজ্ঞাত ও সুপ্রযুক্ত দঙ্গ প্রয়োগে।

৯৩. দণ্ডঃ কদা দুষ্প্রযুক্তঃ ভবতি?

৯৪। দঙ্গঃ কদা দুষ্প্রযুক্তঃ ভবতি?

উত্তর: কামক্রোধাভ্যাম্ অজ্ঞানাত্ বা প্রযুক্তঃ দঙ্গঃ দুষ্প্রযুক্তঃ ভবতি।

উঁঁ: কামক্রোধাভ্যাম্ অজ্ঞানাত্ বা প্রযুক্তঃ দঙ্গঃ দুষ্প্রযুক্তঃ ভবতি।

৯৫। দঙ্গ কখন দুষ্প্রযুক্ত হয়?

উঁঁ: কাম, ক্রান্ত বা অজ্ঞানতাবশতঃ দঙ্গ দুষ্প্রযুক্ত হয়।

৯৬. দুষ্প্রযুক্তস্য দণ্ডস্য ফলং কি ভবতি?

৯৭। দুষ্প্রযুক্তস্য দঙ্গস্য ফলং কি ভবতি?

उत्तरः दुष्प्रयुक्तेन दण्डेण प्रजाः कुपिताः भवन्ति ।

उः सूक्ष्मशृङ्खेन दण्डेन प्रजाः कुपिताः भवन्ति ।

८८। मूल्यशूलु दण्डेर फले कि हयः?

उः प्रजा विद्योऽ।

८९। अप्रणीतस्य दण्डस्य फलं किं भवति?

९०। अप्रणीतस्य दण्डस्य फलं किं भवति?

उत्तरः अप्रणीते दण्डे समाजे मात्स्यन्यायस्य उद्धवः भवति ।

उः अप्रणीते दण्डे समाजे मात्स्यन्यायस्य उद्धवः भवति ।

९१। दण्ड यथोयथं प्रयुक्त ना हले कि हयः?

उः समाजे मात्स्यन्यायेर उद्धव हयः ।

९२। मात्स्यन्यायं किम्?

९३। मात्स्यन्यायं किम्?

उत्तरः दुर्वलान् प्रति सबलानां निष्ठेषणं मात्स्यन्यायम् ।

उः दुर्वलान् प्रति सबलानां निष्ठेषणं मात्स्यन्यायम् ।

९४। मात्स्यन्यायं कि?

उः दुर्वलेर प्रति सबलेर अभावार ।

९५। दण्डधरस्य अभावे समाजे किं भवति?

९६। दण्डधरन्य अभावे समाजे किं भवति?

उत्तरः दण्डधरस्य अभावे वलीयान् दुर्वलं ग्रसते ।

उः दण्डधरन्य अभावे वलीयान् दुर्वलं ग्रसते ।

९७। दण्डधरेर अभावे समाजे कि हयः?

उः वलवान् व्यक्तिवर्गं दुर्वलेर थास करेत ।

९८। चतुर्वर्णश्रीमः लोकः केन पालितः भवति?

९९। चतुर्वर्णश्रीमः लोकः केन पालितः भवति?

उत्तरः राजदण्डेण ।

उः राजदण्डेण ।

१०। वर्णात्मेर प्रकृतं पालक के?

उः राजदण्ड ।

११। प्रजाः कदा सुखिनः भवन्ति?

१२। प्रजाः कदा सुखिनः भवन्ति?

उत्तरः सुप्रणीतेन दण्डेन प्रजाः सुखिनः भवन्ति ।

उः सुप्रणीतेन दण्डेन प्रजाः सुखिनः भवन्ति ।

१३। प्रजागरन कथन सुशी हन?

उः दण्ड सुप्रयुक्त हले ।

१४। इन्द्रियजयशब्दस्य कोऽर्थः?

१५। इन्द्रियजयशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः विषयभोगात् इन्द्रियानां नियन्त्रणम् ।

उः विषयभोगात् इन्द्रियानां नियन्त्रणम् ।

१६। इन्द्रियजयशब्दस्य कोऽर्थः?

उः विषयभोग थेके इन्द्रिय समूहेर नियन्त्रण ।

१७। इन्द्रियजयशब्दस्य उद्देश्यः कोऽस्ति?

१८। इन्द्रियजयशब्दस्य उद्देश्यः कोऽस्ति?

उत्तरः विद्याविनयसम्पादनम् ।

उः विद्याविनयसम्पादनम् ।

१९। इन्द्रियजयशब्दस्य कि?

उः विद्या ओ विनय सम्पादन ।

२०। इन्द्रियजयशब्दस्य कथं सम्पद्यते?

२१। इन्द्रियजयशब्दस्य कथं सम्पद्यते?

उत्तरः कामक्रोधलोभमानमदहर्षत्यागात् ।

उः कामक्रोधलोभमानमदहर्षत्यागात् ।

२२। इन्द्रियजयशब्दस्य किभावे सम्पद्य हते पारेते?

उः काम, क्रोध, लोभ, मान, मद ओ हर्षत्यागेर द्वारा ।

२३। शब्दगुणस्य आश्रयः कः भवति?

२४। शब्दगुणस्य आश्रयः कः भवति?

उत्तरः कर्णम् ।

उः कर्णम् ।

२५। शब्दगुणेर आश्रय कि?

उः कर्ण ।

२६। स्पर्शगुणस्य आश्रयः कः भवति?

२७। स्पर्शगुणस्य आश्रयः कः भवति?

उत्तरः त्वक्।

उः छूः।

१०८। श्वर्णशुद्धेर आश्रय कि?

उः छूः।

१०९। रूपं कम् आश्रयते?

११०। बृप्तं कम् आश्रयते?

उत्तरः चक्षुः।

उः चक्षुः।

१११। बृप्तं काके आश्रय करेते?

उः चक्षुः।

११२। रसस्य आश्रयः कः भवति?

११३। इनसम्यु आश्रयः कः भवति?

उत्तरः जिह्वा।

उः जिह्वा।

११४। इनसेर आश्रय कि?

उः जिह्वा।

११५। गन्धगुणः कम् आश्रयते?

११६। गन्धशुद्धः कम् आश्रयते?

उत्तरः घ्राणोन्द्रियम्।

उः घ्राणेन्द्रियम्।

११७। गन्धशुद्धेर आश्रय कि?

उः घ्राणेन्द्रिय वा नासिका।

११८। कथं राजा सद्यः विनश्यति?

११९। कश्च राजा सद्यः विनश्यति?

उत्तरः अग्नितेन्द्रियः राजा सद्यः विनश्यति।

उः अग्नितेन्द्रियः राजा सद्यः विनश्यति।

१२०। कि धरणेर राजा निश्चित विनाशप्राप्त हन्?

उः अग्नितेन्द्रिय राजा।

१२१. चतुरन्तशब्दस्य कोऽर्थः?

१२२। चतुरत्तुशक्तस्य कोऽर्थः?

उत्तरः समुद्रचतुष्यवेष्टिः।

उः समुद्रचतुष्यवेष्टिः।

१०३। 'चतुरत्तु' शब्देर अर्थ कि?

उः समुद्रचतुष्यवेष्टिः।

१०४। दाण्डक्यः भोजः कथं विनष्टः अभवत्?

१०५। दाउक्यः भोजः कथं विनष्टः अभवत्?

उत्तरः कामात् ब्राह्मणकन्याम् अभिमन्यमानः दाउक्यः भोजः विनष्टः अभवत्।

उः कामात् ब्राह्मणकन्याम् अभिमन्यमानः दाउक्यः भोजः विनष्टः अभवत्।

१०६। दाउक्याभोज केन विनष्टे हयोषिलेन?

उः कामवशतः ब्राह्मण कन्याके कामना करेते।

१०७। दाण्डक्यः कस्मिन् वंशे जातः अभवत्?

१०८। दाउक्यः कस्मिन् वर्णे जातः अभवत्?

उत्तरः भोजवंशे।

उः भोजवंशे।

१०९। दाउक्य कोन् वर्णे जात?

उः भोजवंशे।

११०. करालः कः आसीत्?

१११। करालः कः आसीत्?

उत्तरः विदेहराजः।

उः विदेशराजः।

११२। कराल के शिलेन?

उः विदेश राज।

११३। वैदेहः करालः कथं विनष्टः जात?

११४। वैदेहः करालः कथं विनष्टः जात?

उत्तरः कामात् सवन्धुराष्ट्रः करालः विनष्टः।

उः कामात् सवन्धुराष्ट्रः करालः विनष्टः।

११५। वैदेह कराल केन विनष्टे हयोषिलेन?

उः अज्ञाधिक कामनावशतः।

११६। जनमेजयः कथं विनष्टः अभवत्?

११७। जनमेजयः कथं विनष्टः अभवत्?

- তত্ত্ব: জনমেজয়: কোপাত্ ভ্রাহ্মণেষু বিক্রমং প্রদর্শ্য বিনষ্টঃ অভবত্।
উঃ জনমেজয়ঃ কোপাত্ ভ্রাহ্মণেষু বিক্রমং প্রদর্শ্য বিনষ্টঃ অভবৎ।
১০৮। জনমেজয় কেন বিনষ্ট হয়েছিলেন?
উঃ ক্রোধবশতঃ ভ্রাহ্মণদের উপর পরাক্রম দেখাতে গিয়ে জনমেজয় বিনষ্ট হন।
১০৯। তালসংহৃতঃ কথং বিনষ্টঃ অভবত्?
১১০। তালজঙ্গঃ কথং বিনষ্টঃ অভবৎ?
তত্ত্ব: কোপাত্ তালসংহৃতঃ ভৃগুষু বিক্রমং প্রদর্শ্য বিনষ্টঃ জাতঃ।
উঃ কোপাত্ তালজঙ্গঃ ভৃগুষু বিক্রমং প্রদর্শ্য বিনষ্টঃ জাতঃ।
১১১। তালজঙ্গ কেন বিনাশপ্রাপ্ত হন?
উঃ ক্রোধবশতঃ ভৃগুদের উপর পরাক্রম দেখিয়ে।
১১০। ঐলঃ কঃ আসীত্?
১১১। ঐলঃ কঃ আসীৎ?
তত্ত্ব: ঐলঃ ইলানন্দনঃ পুরুরবা আসীত্।
উঃ ঐলঃ ইলানন্দনঃ পুরুরবা আসীৎ।
১১০। 'ঐল' কে?
উঃ ঐল হলেন ইলানন্দন পুরুরবা।
১১১। ঐলঃ কথং বিনাশঃ প্রাপ্তবান?
১১১। ঐলঃ কথং বিনাশঃ প্রাপ্তবান?
তত্ত্ব: ঐলঃ লোভাত্ চাতুর্বর্ণেষ্যঃ অপ্রয়ত্নিক পরিমাণতঃ ধনম্ অপহৃত্য বিনাশঃ প্রাপ্তবান্ন।
উঃ ঐলঃ লোভাত্ চাতুর্বর্ণেভ্যঃ অত্যধিকং পরিমাণতঃ ধনম্ অপহৃত্য বিনাশঃ প্রাপ্তবান।
১১১। রাজা ঐল কিভাবে বিনষ্ট হন?
উঃ লোভবশতঃ ঐল চতুর্বর্ণের নিকট থেকে অত্যধিক পরিমাণে কর আদায় করে বিনষ্ট হন।
১১২। অজবিন্দুঃ কঃ আসীত्?
১১২। অজবিন্দুঃ কঃ আসীৎ?
তত্ত্ব: অজবিন্দুঃ সৌবীররাজঃ আসীত্।
উঃ অজবিন্দুঃ সৌবীররাজঃ আসীৎ।
১১২। অজবিন্দু কে?

- উঃ সৌবীররাজ।
১১৩। সৌবীররাজঃ অজবিন্দুঃ কথং বিনষ্টঃ জাতঃ?
১১৪। সৌবীররাজঃ অজবিন্দুঃ কথং বিনষ্টঃ জাতঃ?
তত্ত্ব: লোভাত্ প্রজাভ্যঃ ধনমপহৃত্য সৌবীররাজঃ অজবিন্দুঃ বিনষ্টঃ জাতঃ।
উঃ লোভাত্ প্রজাভ্যঃ ধনমপহৃত্য সৌবীররাজঃ অজবিন্দুঃ বিনষ্টঃ জাতঃ।
১১৫। অজবিন্দু কেন বিনাশপ্রাপ্ত হয়েছিলেন?
উঃ লোভবশতঃ প্রজাদের নিকট থেকে অত্যধিক পরিমাণে কর প্রহর করে অজবিন্দু বিনষ্ট হন।
১১৬। মানাত্ কঃ নিহতঃ অভবত्?
১১৭। মানাত্ কঃ নিহতঃ অভবৎ?
তত্ত্ব: মানাত্ লক্ষ্মীশ্঵রঃ রাবণঃ সীতাদেবীং অপ্রযচ্ছন্ন রামেণ নিহতঃ অভবৎ।
উঃ মানাত্ লক্ষ্মীশ্বরঃ রাবণঃ সীতাদেবীং অপ্রযচ্ছন্ন রামেণ নিহতঃ অভবৎ।
১১৮। মানবশতঃ কে নিহত হন?
উঃ লক্ষ্মীশ্বর রাবণ।
১১৯। দুর্যোধনঃ কথং নিহতঃ অভবত्?
১২০। দুর্যোধনঃ কথং নিহতঃ অভবৎ?
তত্ত্ব: মানাত্ পাণ্ডবেভ্যঃ রাজ্যাংশঃ অপ্রযচ্ছন্ন দুর্যোধনঃ নিহতঃ অভবত্।
উঃ মানাত্ পাণ্ডবেভ্যঃ রাজ্যাংশঃ অপ্রযচ্ছন্ন দুর্যোধনঃ নিহতঃ অভবৎ।
১২১। দুর্যোধন কেন নিহত হন?
উঃ অভিমানবশতঃ পাণ্ডবদের প্রাপ্ত রাজ্যাংশ প্রত্যর্পণে অনিচ্ছুক হয়ে দুর্যোধন বিনষ্ট হন।
১২২। ডম্বোদ্রবঃ কথং বিনষ্টঃ জাতঃ?
১২৩। ডম্বোদ্রবঃ কথং বিনষ্টঃ জাতঃ?
তত্ত্ব: মদাত্ রাজা ডম্বোদ্রবঃ প্রজাঃ অপমানিত্য নিহতঃ জাতঃ।
উঃ মদাত্ রাজা ডম্বোদ্রবঃ প্রজাঃ অপমানিত্য নিহতঃ জাতঃ।
১২৪। ডম্বোদ্রব কেন বিনাশপ্রাপ্ত হন?
উঃ মন্ত্রতাহেতু প্রজাদের অপমান করে ডম্বোদ্রব নিহত হন।
১২৫। হেহ্যরাজঃ কঃ আসীত্?
১২৬। হেহ্যরাজঃ কঃ আসীৎ?
তত্ত্ব: হেহ্যরাজঃ অর্জুনঃ আসীত্।

उः हेहयराजः अर्जुनः आसी॑।

११७। हेहय राज के?

उः हेहय राज अर्जुन।

११८। वातापि: क: आसीत्?

११८। वातापि: क: आसी॑?

उत्तरः वातापि: दानवविशेषः।

उः वातापि: दानवविशेष।

११८। वातापि के छिलेन?

उः वातापि दानवविशेष।

११९। वातापि: कथं निहतः ग्रभत्?

११९। वातापि: कथं निहतः अभवत्?

उत्तरः हर्षात् वातापि: महर्षिं अगस्त्यम् अवमन्यमानः निहतः ग्रभत्।

उः हर्षात् वातापि: महर्षिं अगस्त्यम् अवमन्यमानः निहतः अभवत्।

११९। वातापि केन निहत् हन?

उः हर्षवशतः महर्षिं अगस्त्येर अवमानना करे वातापि विनष्टे हन।

१२०। वृष्णिसङ्घशब्दस्य कोऽर्थः?

१२०। वृष्णिसङ्घशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः वृष्णिवंशीयाः तथा यदुवंशीयाः यादवाः।

उः वृष्णिवंशीयाः तथा यदुवंशीयाः यादवाः।

१२०। 'वृष्णिसङ्घ' शब्देर अर्थ कि?

उः वृष्णि तथा यदुवंशजात यादवगण।

१२१। वृष्णिवंशीयाः कथं विनष्टः जाताः?

१२१। वृष्णिवंशीयाः कथं विनष्टः जाताः?

उत्तरः महर्षिं द्वैपायनम् उपहस्य वृष्णिवंशीयाः विनष्टः जाताः।

उः महर्षिं द्वैपायनम् उपहस्य वृष्णिवंशीयाः विनष्टः जाताः।

१२१। वृष्णिवंशीयगण किभाबे विनष्टे हय?

उः महर्षिं द्वैपायनके उपहस्य करे वृष्णिवंशीयगण विनष्टे हन।

१२२। अर्थशास्त्रानुसारं अजितेन्द्रियाः शासकाः के सन्ति?

१२२। अर्थशास्त्रानुसारं अजितेन्द्रियाः शासकाः के सन्ति?

उत्तरः दाण्डक्यः भोजः, वैदेहः करालः, जनमेजयः, तालजङ्घः, सौवीरः ग्रजविन्दुः,

लङ्घेश्वरः रावणः, कौरवः दुर्योधनः, डम्बोद्भवः, हैहेयः अर्जुनः, वातापि:

वातापि: वृष्णिसङ्घश्वरः भोजः, वैदेहः करालः, जनमेजयः, तालजङ्घः, सौवीरः ग्रजविन्दुः, वृष्णिसङ्घश्वरः

१२२। अर्थशास्त्रे उल्लिखित अजितेन्द्रिय शासकगण के के?

उः दाण्डक्यः भोजः, वैदेहः करालः, जनमेजयः, तालजङ्घः, सौवीरः ग्रजविन्दुः, लङ्घेश्वरः रावणः, कौरवः दुर्योधनः, डम्बोद्भवः, हैहेयः अर्जुनः, वातापि:

१२३. कामात् निहतौ राजानौ कौ स्तः?

१२३। कामात् निहतौ राजानौ कौ स्तः?

उत्तरः दाण्डक्यः भोजः वैदेहः करालश्वरः।

उः दाण्डक्यः भोजः वैदेहः करालश्वरः।

१२३। कामवशतः निहत दुर्जन राजा के के?

उः दाण्डक्यः भोजः ओ वैदेहः कराल।

१२४. कोपात् विनष्टौ शासकौ कौ स्तः?

१२४। कोपात् विनष्टौ शासकौ कौ स्तः?

उत्तरः जनमेजयः तालजङ्घश्वरः।

उः जनमेजयः तालजङ्घश्वरः।

१२४। क्रोधवशतः निहत राजा दुर्जन के के?

उः जनमेजयः ओ तालजङ्घ।

१२५. लोभात् कौ विनष्टौ जातौ?

१२५। लोभात् कौ विनष्टौ जातौ?

उत्तरः ऐलः पुरुरवा सौवीरः ग्रजविन्दुश्वरः।

उः ऐलः पुरुरवा सौवीरः ग्रजविन्दुश्वरः।

१२५। लोभवशतः निहत राजा के के?

उः ऐल पुरुरवा ओ सौवीर ग्रजविन्दु।

१२६. मानात् कौ विनष्टौ?

१२६। मानात् कौ विनष्टौ?

उत्तरः लङ्घेश्वरः रावणः कौरवः दुर्योधनश्वरः।

उः लङ्घेश्वरः रावणः कौरवः दुर्योधनश्वरः।

अर्थशास्त्रम्-19

१२६। मानवशतः के के विनष्टे हन?

उः लज्जक्षर रावण ओ कोरब दुर्योधन।

१२७। मदात् कौं विनाशप्राप्तौ आस्ताम्?

१२८। मदात् को विनाशप्राप्तौ आस्ताम्?

उत्तरः राजा डम्बोद्धवः हैहेयः अर्जुनश्च।

उः राजा डम्बोद्धव ओ हैहेय अर्जुनश्च।

१२९। अनुताहेतु कारा विनष्टे हन?

उः राजा डम्बोद्धव ओ हैहेय अर्जुन।

१३०। हर्षात् कौं विनष्टौ?

१३१। हर्षात् को विनष्टौ?

उत्तरः वातापि वृष्णिसङ्घश्च।

उः वातापि वृष्णिसङ्घश्च।

१३२। हर्षवशतः के के विनष्टे हन?

उः वातापि दानर ओ वृष्णिवृशीयगण।

१३३। अर्थशास्त्रानुसारं जितेन्द्रियाः शासकाः के सन्ति?

१३४। अर्थशास्त्रानुसारं जितेन्द्रियाः शासकाः के सन्ति?

उत्तरः जामदग्न्यः, अम्बरीषः नाभागाश्च।

उः जामदग्न्यः, अम्बरीषः नाभागाश्च।

१३५। अर्थशास्त्रे उच्चित जितेन्द्रिय शासक के के?

उः जामदग्न्य, अम्बरीष ओ नाभाग।

१३६। अरिषड्बर्गः कः भवति?

१३७। अरिषड्बर्गः कः उवति?

उत्तरः काम—क्रोध—लोभ—मान—मद—हर्षश्च अरिषड्बर्गः।

उः काम—क्रोध—लोभ, मान, मद ओ हर्ष—एই छयटि।

१३८। अर्जविन्दुः कः की?

उः काम, क्रोध, लोभ, मान, मद ओ हर्ष—एই छयटि।

१३९। अर्जविन्दुः कः आसीत्?

१४०। अर्जविन्दुः कः आसीत्?

उत्तरः सुवीरप्रदेशस्य राजा अर्जविन्दुः आसीत्।

उः सुवीरप्रदेशस्य राजा अर्जविन्दुः आसीत्।

१३१। अजविन्दु के छिलेन?

उः सुवीर अदेशेत राजा।

१३२। इन्द्रियजयः कथं साध्यते?

१३३। इन्द्रियजयः कथं साध्यते?

उत्तरः अरिषड्बर्गत्यागात्।

उः अरिषड्बर्गत्यागात्।

१३४। इन्द्रियजय किभावे सम्भव?

उः अरिषड्बर्गत्यागेर माध्यमे।

१३५। प्रजा कथं साध्यते?

१३६। प्रजा कथं साध्यते?

उत्तरः 'वृद्धसंयोगेन' अर्थात् ज्ञानवृद्धानां संयोगात्।

उः 'वृद्धसंयोगेन' अर्थात् ज्ञानवृद्धानां नयोगात्।

१३७। किभावे प्रजावान् इहया यामः?

उः वृद्धसंयोग तथा ज्ञानवृद्धदेव संस्पर्शे।

१३८। नृपस्य चक्षुकार्यम् तथा राष्ट्रदर्शनं कथं सम्पद्यते?

१३९। नृपस्य चक्षुकार्यम् तथा ज्ञानवृद्धसंयोगेन कथं सम्पद्यते?

उत्तरः चारेण।

उः चारेण।

१४०। राजार चक्षु के?

उः चर वा दृतगम।

१४१। राजा योगक्षेमं कथं सम्पादयति?

१४२। राजा योगक्षेमं कथं सम्पादयति?

उत्तरः उत्थानेन तथा उत्साहयोगेन।

उः उत्थानेन तथा उत्साहयोगेन।

१४३। राजार योगक्षेम किभावे साधित हय?

उः उत्थान तथा उत्साहयोगेर द्वारा।

१४४। राजार स्वधर्मस्थापनं कथं सम्पद्यते?

१४५। राज्ञः अधर्मस्थापनं कथं सम्पद्यते?

उत्तरः कार्यानुशासनेन।

उः कार्यानुशासनेन।

१७६। राजा ऋथर्मस्थापन किभावे हयः?

उः कार्यानुशासने द्वारा।

१३७। राजा कथं विनयी भवति?

१७७। राजा कथं विनयी भवति?

उत्तरः विद्योपदेशन।

उः विद्योपदेशन।

१७७। राजा किभावे विनयी हवेन?

उः विद्योपदेशे द्वारा।

१३८। राजा लोकप्रियत्वं कथम् अर्जयति?

१७८। राजा लोकप्रियत्वं कथम् अर्जयति?

उत्तरः अर्थसंयोगेन।

उः अर्थसंयोगेन।

१३९। राजा लोकप्रियत्वं किभावे अर्जन करवेन?

उः अर्थसंयोगे द्वारा।

१३९। राजा राजकार्यं कथं सम्पादयेत्?

१३९। राजा राजकार्यं कथं सम्पादयेत्?

उत्तरः मङ्गलविधायकेन कार्येन।

उः मङ्गलविधायकेन कार्येन।

१३९। राजा राजकार्यं किभावे सम्पादन करवेन?

उः प्रजा कल्याणरूप कार्ये द्वारा।

१४०। साफल्यलाभार्थं राजा कानि वर्जनीयानि?

१४०। साफल्यलाभार्थं राजा कानि वर्जनीयानि?

उत्तरः परस्त्री द्रव्यहिंसा स्वप्नं लौल्यम् अनृतत्वम् उद्धतवेष्टव्यम् अनर्थसंयोगम्

अधर्मानि।

उः परस्त्री द्रव्यहिंसा स्वप्नं लौल्यम् अनृतत्वम् उद्धतवेष्टव्यम् अनर्थसंयोगम्
अधर्मानि।

१४०। साफल्यलाभेर जन्य राजाके कि कि वर्जन करते हवे?

उः परस्त्री, द्रव्यहिंसा, दिवावश्च, चपलता, मिथ्याचार, उद्धतवेष्टव्यम्, अनर्थसंयोग एवं
अधर्म।

१४१। कामः कथं सेव्यः?

१४१। कामः कथं सेव्यः?

उत्तरः धर्मार्थाविरोधेन कामः सेव्यः।

उः धर्मार्थाविरोधेन कामः सेव्यः।

१४१। राजा किभावे कामेर सेवा करवेन?

उः धर्म ओ अर्थेर साथे अविरोधभावे।

१४२। त्रिवर्गं प्रति राजः व्यवहारः कीदृशः भवेत्।

१४२। त्रिवर्गं प्रति राजः व्यवहारः कीदृशः भवेत्?

उत्तरः समर्मादया त्रिवर्गः सेव्यः। उक्तं च शास्त्रे—‘धर्मार्थकामः सममेव सेव्यः।

यो होकासक्तः स नरः जघन्यः।’

उः समर्मादया त्रिवर्गः सेव्यः। उक्तं च शास्त्रे—‘धर्मार्थकामः सममेव सेव्यः। यो
होकासक्तः स नरः जघन्यः।’

१४२। त्रिवर्गेर प्रति राजार आचरण कीरकम् हवे?

उः समान वर्यादाय धर्म, अर्थ ओ कामेर सेवा करते हवे।

१४३. कौटिल्यानुसारं त्रिवर्गेषु कः प्रधानः?

१४३। कोटिल्यानुसारं त्रिवर्गेषु कः प्रधानः?

उत्तरः अर्थ एव प्रधानः।

उः अर्थ एव प्रधानः।

१४३। कोटिल्येर मते त्रिवर्गेर मध्ये प्रधान कोनाटि?

उः अर्थ।

१४४. धर्मकामयोः मूलं किमस्ति?

१४४। धर्मकामयोः मूलं किमस्ति?

उत्तरः अर्थो हि धर्मकामयोः मूलम्।

उः अर्थो हि धर्मकामयोः मूलम्।

१४४। धर्म ओ कामेर मूल कि?

उः अर्थ।

१४५. अर्थशास्त्रं किमर्थं रचितम्?

१४५। अर्थशास्त्रं किमर्थं रचितम्?

उत्तरः नरेन्द्राणां प्रयोजनसिद्ध्यर्थम्।

उः नरेन्द्राणां प्रयोजनसिद्ध्यर्थम्।

१४५। अर्थशास्त्रं केन रचित हयेष्ठिल?

- উঃ রাজাদের প্রয়োজন সির্বির জন।
 ১৪৫. অপায়স্থানেভ্যঃ রাজানং কে রক্ষণি ?
 ১৪৬। অপায়স্থানেভাঃ রাজানং কে রক্ষণি ?
 উত্তর: আচাৰ্যাদ্যব্যঃ অমাত্যাদ্যব্যঃ।
 উঃ আচাৰ্যাদ্যব্যঃ অমাত্যাদ্যব্যঃ।
 ১৪৭। বিপদ থেকে রাজাকে কে রক্ষা কৰেন ?
 উঃ আচাৰ্য ও অমাত্যগণ।
 ১৪৮। ছায়ানালিকা শব্দস্য কোৰ্থঃ ?
 ১৪৯। ছায়ানালিকা শব্দস্য কোইৰ্থঃ ?
 উত্তর: অর্থশাস্ত্রস্য পরিভাষিক: কংশিত্ব শব্দঃ ছায়ানালিকা। সময়পরিমাপার্থ
 মানুষেণ শব্দোভ্যং ব্যবহৃতে।
 উঃ অর্থশাস্ত্র পারিভাষিকঃ কংশিত্ব শব্দঃ ছায়ানালিকা। সময়পরিমাপার্থ মানুষেণ
 শব্দোভ্যং ব্যবহৃতে।
 ১৫০। 'ছায়ানালিকা' কি ?
 উঃ 'ছায়ানালিকা' অর্থশাস্ত্রের একটি পারিতাত্ত্বিক শব্দ। সময়ের পরিমাপ হিসেবে
 শব্দটি উল্লিখিত।
 ১৫১। নালিকা ইতি শব্দেন কি বোধ্যতে ?
 ১৫২। নালিক ইতি শব্দেন কি বোধ্যতে ?
 উত্তর: দিবাভাগস্য অষ্টাঁ নিশাযাশ্চ অষ্টাঁ ভাগাঃ নালিকাশব্দেন বোধ্যতে।
 উঃ দিবাভাগস্য অষ্টো নিশাযাশ্চ অষ্টোভাগাঃ নালিকাশব্দেন বোধ্যতে।
 ১৫৩। 'নালিকা' কি ?
 উঃ দিবের আট ও রাত্রির আট ভাগকে নালিকা বলে।
 ১৫৪। ছায়া প্রমাণস্য কিয়ন্ত: বিভাগাঃ সন্তি ?
 ১৫৫। ছায়া প্রমাণস্য কিয়ন্তঃ বিভাগাঃ সন্তি ?
 উত্তর: চতুরাঃ বিভাগাঃ— প্রিপৌরূপী, পৌরূপী, চতুরঙ্গুলা, নষ্টচ্ছায়ঃ মধ্যাহ্নশ্চেতি।
 উঃ চতুরঃ বিভাগাঃ— প্রিপৌরূপী, পৌরূপী, চতুরঙ্গুলা, নষ্টচ্ছায়ঃ মধ্যাহ্নশ্চেতি।
 ১৫৬। ছায়া প্রমাণের ক্যাটি ও কি কি ভাগ ?
 উঃ চারটি— প্রিপৌরূপী, পৌরূপী, চতুরঙ্গুলা ও নষ্টচ্ছায় মধ্যাহ্ন।
 ১৫৭। রাজকার্যে রাজ্ঞঃ সহায়ঃ ক: ভবতি ?
 , ১৫৮। রাজকার্যে রাজ্ঞঃ সহায়ঃ কঃ ভবতি ?

- উত্তর: মন্ত্রিপরিপত্তি।
 উঃ মন্ত্রিপরিযৎ।
 ১৫০। রাজকার্যে রাজার সহায় কি ?
 উঃ মন্ত্রিপরিযদ।
 ১৫১। সহায়বিহীনঃ রাজা কেন সহ উপমিতঃ ?
 ১৫২। সহায়বিহীনঃ রাজা কেন সহ উপমিতঃ ?
 উত্তর: একচক্রেণ রথেন সহ।
 উঃ একচক্রেণ রথেন সহ।
 ১৫৩। সহায়বিহীন রাজাকে কার সাথে তুলনা করা হয় ?
 উঃ একচক্র রথের সাথে।
 ১৫৪। রাজ্ঞঃ মর্যাদা কথং রক্ষ্যতে ?
 ১৫৫। রাজ্ঞঃ মর্যাদা কথং রক্ষ্যতে ?
 উত্তর: আচাৰ্যামাত্যাদীনাং সতর্কবচনেন।
 উঃ আচাৰ্যামাত্যাদীনাং সতর্কবচনেন।
 ১৫৬। রাজার মর্যাদা কিভাবে রক্ষিত হয় ?
 উঃ আচাৰ্য ও অমাত্যদের সতর্ক বচনের দ্বারা।
 ১৫৭। ভারদ্বাজঃ ক: আসীত ?
 ১৫৮। ভারদ্বাজঃ কঃ আসীৎ ?
 উত্তর: ভরদ্বাজস্য পুত্ৰঃ ভারদ্বাজঃ তথা দ্রোণাচার্যঃ।
 উঃ ভরদ্বাজস্য পুত্ৰঃ ভারদ্বাজঃ তথা দ্রোণাচার্যঃ।
 ১৫৯। ভারদ্বাজ কে ?
 উঃ ভরদ্বাজের পুত্ৰ তথা দ্রোণাচার্যঃ।
 ১৬০। ভারদ্বাজানুসারং কেষু রাজা অমাত্যনির্বাচনং কুর্যাত ?
 ১৬১। ভারদ্বাজানুসারং কেষু রাজা অমাত্যনির্বাচনং কুর্যাত ?
 উত্তর: সহাধ্যাযিষু।
 উঃ সহাধ্যাযিষু।
 ১৬২। ভারদ্বাজ কাদের মধ্য থেকে রাজাকে অমাত্য নির্বাচনের পরামর্শ দেন ?
 উঃ সহাধ্যাদের মধ্য থেকে।
 ১৬৩। ভারদ্বাজানুসারং অমাত্যনির্বাচনে কীদৃশং গুণং বিবেচ্যম ?
 ১৬৪। ভারদ্বাজানুসারং অমাত্যনির্বাচনে কীদৃশং গুণং বিবেচ্যম ?

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

२९६

- उत्तरः शौचं कार्यसामर्थ्यं च।
 उः स्तोत्रं कार्यसामर्थ्यं च।
 १५५। भारद्वाजेर मते अमात्यगृह कि?
 उः शृष्टिं ओ कार्यसामर्थ्यं।
 १५६। 'सहक्रीडितत्वात् परिभवन्त्येनम्' इति कस्य मतम्?
 १५७। 'सहक्रीडितहाह परिभवत्येनम्' इति कस्य मतम्?
 उत्तरः विशालाक्षस्य।
 उः विशालाक्षस्य।
 १५८। 'सहक्रीडितहाह परिभवत्येनम्' — कार मत?
 उः विशालाक्षेर।
 १५९। विशालाक्षस्य मतानुसारं के तावत् अमात्यपदयोग्याः?
 १६०। विशालाक्षस्य मतानुसारं के तावत् अमात्यपदयोग्याः?
 उत्तरः गुह्यसधर्मणः अमात्यपदयोग्याः।
 उः गुह्यसधर्मणः अमात्यपदयोग्याः।
 १६१। विशालाक्षेर मते कारा अमात्यपदयोग्याः?
 उः राजार गोपन विहय वारा जानेन, तीरा।
 १६२। गुह्यसधर्मणः कथम् अमात्यपदयोग्याः भवन्ति?
 १६३। गुह्यसधर्मणः कथम् अमात्यपदयोग्याः भवन्ति?
 उत्तरः समानशीलव्यसनत्वात् ममज्ञभयात् च।
 उः समानशीलव्यसनत्वात् ममज्ञभयात् च।
 १६४। गुह्यसधर्मा व्यक्तिगत केन अमात्यपदयोग्याः?
 उः दोषगृहं येहेतु नमन, सेजन् राजा येहेतु ताँदेर दुर्बल स्थान जानेन, सेजन् भये अमात्यगृह राजार प्रति अनुगत थाकबेन।
 १६५। 'साधारण एषः दोषः' इति कः मन्यते?
 १६६। 'साधारण एवः दोषः' इति कः मन्यते?
 उत्तरः आचार्यः पराशरः।
 उः आचार्यः पराशरः।
 १६७। 'साधारण एवो दोषः' — के एই उक्ति करेछेन?
 उः आचार्य पराशर।
 १६८। पराशरस्य मतानुसारं के तावत् अमात्यपदयोग्याः?

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

२९७

- १६०। पराशरस्य मतानुसारं के तावत् अमात्यपदयोग्याः?
 उत्तरः ये खलु राजकर्मचारिणः प्राणाशङ्कायुक्तासु अपि राजानं रक्षेयुः ते एव अमात्यपदयोग्याः।
 उः ये खलु राजकर्मचारिणः प्राणाशङ्कायुक्तासु अपि राजानं रक्षेयुः ते एव अमात्यपदयोग्याः।
 १६१। पराशरेर मते कारा अमात्यपदयोग्याः?
 उः प्राणेर विनिमये वे ये समन्त राजकर्मचारी राजाके रक्षा कराते सन्दर्भ, ताँदेर मध्य थेकेइ अमात्य निर्बाचन कराते हवे।
 १६२। पराशरानुसारं प्रधानम् अमात्यगृहं किं भवेत्?
 १६३। पराशरानुसारं प्रधानम् अमात्यगृहं किं भवेत्?
 उत्तरः राजानुगत्यम्।
 उः राजानुगत्यम्।
 १६४। पराशरेर मते प्रधान अमात्यगृह कि?
 उः राजानुगत्य।
 १६५। पिशुनः कः भवति?
 १६६। पिशुनः कः भवति?
 उत्तरः नारदः पिशुन इति ख्यातः।
 उः नारदः पिशुन इति ख्यातः।
 १६७। पिशुन के?
 उः पिशुन हलेन आचार्य नारद।
 १६८। 'भक्तिरेषा न बुद्धिगृहः' इति केन कथितः?
 १६९। 'भक्तिरेषा न बुद्धिगृहः', इति केन कथितः?
 उत्तरः आचार्येण पिशुनेन।
 उः आचार्येण पिशुनेन।
 १७०। 'भक्तिरेषा न बुद्धिगृहः' — कार उक्ति?
 उः आचार्य पिशुनेन।
 १७१। पिशुनानुसारं के खलु राजकर्मचारिणः अमात्यपदयोग्याः?
 १७२। पिशुनानुसारं के खलु राजकर्मचारिणः अमात्यपदयोग्याः?
 उत्तरः अर्थागमकर्मसु ये खलु दक्षाः ते एव अमात्यपदयोग्याः।
 उः अर्थागमकर्मसु ये खलु दक्षाः ते एव अमात्यपदयोग्याः।

- ১৬৪। পিশুনের মতে কারা অমাত্যপদের যোগ্য ?
উঃ অর্থগ্রহ কর্ম র্যারা দক্ষ তাঁদের মধ্য থেকেই অমাত্য নিয়োগ করতে হবে।
- ১৬৫। পিশুনানুসার শ্রেষ্ঠম্ অমাত্যগুণ কি ভবতি ?
- ১৬৬। পিশুনানুসারং শ্রেষ্ঠ অমাত্যগুণং কিং ভবতি ?
উত্তর: গুণবত্ত্বম্।
- উঃ গুণবত্ত্ব।
- ১৬৭। পিশুনের মতে শ্রেষ্ঠ অমাত্যগুণ কি ?
উঃ গুণবত্ত।
- ১৬৮। কৌণপদন্তঃ কঃ আসীত ?
১৬৯। কৌণপদন্তঃ কঃ আসীৎ ?
উত্তর: আচার্যঃ ধীঘঃ কৌণপদন্তঃ ইতি খ্যাতঃ।
- ১৭০। কৌণপদন্ত কে ?
উঃ আচার্য ভীষণ।
- ১৭১। 'অন্তে:রমাত্যগুণেরযুক্তাঃ ইতি কেন ভণিতঃ ?
১৭২। 'অন্তেরমাত্যগুণেরযুক্তাঃ ইতি কেন ভণিতঃ ?
উত্তর: আচার্যেণ কৌণপদন্তেন তথা ধীঘেণ।
- ১৭৩। আচার্যেণ কৌণপদন্তেন তথা ভীষণে।
১৭৪। 'অন্তেরমাত্যগুণেরযুক্তাঃ' — কার উক্তি ?
উঃ আচার্য কৌণপদন্ত তথা ভীষণে।
- ১৭৫। কৌণপদন্তানুসারং অমাত্যগুণ কি ভবতি ?
১৭৬। কৌণপদন্তানুসারং অমাত্যগুণং কিং ভবতি ?
উত্তর: কুলপরম্পরাগতম্ ঐতিহ্যম।
- উঃ কুলপরম্পরাগতম্।
- ১৭৭। কৌণপদন্তের মতে প্রধান অমাত্যগুণ কি ?
উঃ কুলপরম্পরাগত ঐতিহ্য।
- ১৭৮। কৌণপদন্তের মতে প্রধান অমাত্যগুণ কি ?
১৭৯। কৌণপদন্তঃ কথম্ কুলপরম্পরাগতম্ ঐতিহ্যম্ শ্রেষ্ঠম্ অমাত্যগুণং মন্ত্যতে ?
উত্তর: কুলপরম্পরাগতাঃ অমাত্যাঃ অপচরন্তমপি রাজানং ন ত্যজন্তি।
- উঃ কুলপরম্পরাগতাঃ অমাত্যাঃ অপচরন্তমপি রাজানং ন ত্যজন্তি।

- ১৭০। কুলপরম্পরাগত ঐতিহ্যকে কৌণপদন্ত প্রধান অনাত্যগুণ বলে মনে করেন কেন ?
উঃ কুলপরম্পরাগত ঐতিহ্যসম্পর্ক অমাত্যগুণ অন্যায় করলেও রাজাকে ত্যাগ করেন না।
- ১৭১। বাতব্যাধিঃ কঃ ভবতি ?
১৭২। বাতব্যাধিঃ কঃ ভবতি ?
উত্তর: উদ্ধৃতঃ।
- উঃ উদ্ধৃতঃ।
- ১৭৩। বাতব্যাধি কে ?
উঃ আচার্য উদ্ধৃতঃ।
- ১৭৪। উদ্ধৃতঃ কথম্ কুলপরম্পরাগতম্ ঐতিহ্যম্ অমাত্যগুণং ন মন্ত্যতে ?
১৭৫। উদ্ধৃতঃ কথম্ কুলপরম্পরাগতম্ ঐতিহ্যম্ অমাত্যগুণং ন মন্ত্যতে ?
উত্তর: উদ্ধৃতানুসারং কুলপরম্পরাগতাঃ অমাত্যাঃ সর্বম্ অবগৃহ্য রাজনি স্বামিত্ব আচরন্তি।
- উঃ উদ্ধৃতানুসারং কুলপরম্পরাগতাঃ অমাত্যাঃ সর্বম্ অবগৃহ্য রাজনি স্বামিত্ব আচরন্তি।
- ১৭৬। উদ্ধৃতবানুসারং কুলপরম্পরাগত ঐতিহ্যকে অমাত্যগুণ বলে স্বীকার করেন না ?
উঃ উদ্ধৃতব মনে করেন, কুল পরম্পরাগত ব্যক্তিগণ থেকে অমাত্য নিযুক্ত হলে তাঁরা রাজার উপর প্রভুত্ব করতে পারেন।
- ১৭৭। উদ্ধৃতানুসারং কে খলু অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ?
১৭৮। উদ্ধৃতবানুসারং কে খলু অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ?
উত্তর: নীতিবিদঃ নবীনাঃ।
- উঃ নীতিবিদঃ নবীনাঃ।
- ১৭৯। উদ্ধৃতবানের মতে কারা অমাত্যপদের যোগ্য ?
উঃ নীতিজ্ঞ নবীন ব্যক্তিগণ।
- ১৮০। উদ্ধৃতবানুসারং নবীনাঃ কথম্ অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ?
১৮১। উদ্ধৃতবানুসারং নবীনাঃ কথম্ অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ?
উত্তর: নবীনাঃ রাজানং যমস্থোন দণ্ডধরং মন্ত্যমানাঃ ন অপরাধ্যন্তি।
উঃ নবীনাঃ রাজানং যমস্থানে দণ্ডধরং মন্ত্যমানাঃ ন অপরাধ্যন্তি।
- ১৮২। উদ্ধৃতব কেন নবীনদের অমাত্যপদের উপযুক্ত মনে করেন ?

কোটলীয়ম্ অর্থশাস্ত্রম্

৩০০

- উঃ নবীনগণ রাজাকে নায়ের প্রতীক প্রকৃত দণ্ডধর মনে করে কথনে অন্যায় করতে
সাহস পাবেন না।
- ১৭৪। বাহুদন্তীপুত্রঃ কঃ ভবতি ?
- ১৭৫। বাহুদন্তীপুত্রঃ কঃ ভবতি ?
- উত্তরঃ ইত্রঃ ।
- উঃ ইত্রঃ ।
- ১৭৬। বাহুদন্তীপুত্র কে ?
- উঃ ইত্রঃ ।
- ১৭৭। বাহুদন্তীপুত্রঃ উন্দবমতঃ কথং ন স্বীকরোতি ?
- উত্তরঃ যতঃ শাস্ত্রবিদ্য অদৃষ্টকর্ম কর্মসু বিষাদং গচ্ছত् ।
- উঃ যতঃ শাস্ত্রবিদ্য অদৃষ্টকর্ম কর্মসু বিষাদং গচ্ছৎ ।
- ১৭৮। বাহুদন্তীপুত্র কেন উন্দবের মত স্বীকার করেন না ?
- উঃ বাহুদন্তীপুত্র মনে করেন শাস্ত্রজ্ঞ হয়েও যাঁরা অদৃষ্টকর্ম তাঁরা প্রতিপদেই ব্যর্থ হন
অভিজ্ঞতার অভাবে।
- ১৭৯। বাহুদন্তীপুত্রানুসারং কে তাবত্ অমাত্যপদস্য যোগ্যাঃ ভবন্তি ?
- ১৮০। বাহুদন্তীপুত্রানুসারং কে তাৰৎ অমাত্যপদস্য যোগ্যাঃ ভবন্তি ?
- উত্তরঃ অধিজনপ্রজাশাশোচশোর্যনুরাগযুক্তাঃ রাজকর্মচারিণঃ অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ।
- উঃ অভিজনপ্রজাশাশোচশোর্যনুরাগযুক্তাঃ রাজকর্মচারিণঃ অমাত্যপদস্য উপযুক্তাঃ ।
- ১৮১। বাহুদন্তীপুত্রের মতে কারা অমাত্যপদের উপযুক্ত ?
- উঃ যাঁরা অভিজন প্রজা, শুচিতা শৌখ ও আনুগত্যসম্পন্ন তাঁরাই অমাত্যপদের
যোগ্যা।
- ১৮২। অমাত্যনিয়োগবিষয়ে কৌটিল্যস্য পরামর্শঃ কঃ ভবতি ?
- ১৮৩। অমাত্যনিয়োগবিষয়ে কৌটিল্যস্য পরামর্শঃ কঃ ভবতি ?
- উত্তরঃ যতঃ কার্যসমার্থ্যাত্ হি পুরুষসামর্থ্য কল্পতে, অথ সমর্থপুরুষাঃ অমাত্যপদস্য
যোগ্যাঃ ।
- উঃ যতঃ কার্যসমার্থ্যাত্ হি পুরুষসামর্থ্য কল্পতে, অথ সমর্থপুরুষাঃ অমাত্যপদস্য
যোগ্যাঃ ।
- ১৮৪। অমাত্য নিয়োগ বিষয়ে কৌটিল্যের অভিমত কি ?
- উঃ কৌটিল্য মনে করেন কার্যসমার্থ্যের দ্বারাই ব্যক্তির সামর্থ্য নির্ণীত হয়। তাই

অমাত্যদের কার্যসমার্থ্য সম্পন্ন হতে হবে।

১৮৫। গুদ্ধপুরুষশব্দস্য কোহর্থঃ ?

১৮৬। গুচ্চপুরুষকস্য কোহর্থঃ ?

উত্তরঃ গুস্তরঃ ।

উঃ গুপ্তচরঃ ।

১৮৭। 'গুচ্চপুরুষ' শব্দের অর্থ কি ?

উঃ গুপ্তচরঃ ।

১৮৮। অমাত্যবর্গঃ কথং শোধিতঃ স্যাত् ?

১৮৯। অমাত্যবর্গঃ কথং শোধিতঃ স্যাত্ ?

উত্তরঃ উপধাচতুষ্টয়েঃ ।

উঃ উপধাচতুষ্টয়েঃ ।

১৯০। গুপ্তচরাঃ কতিবিধাঃ ভবন্তি ? কে চ তে ?

১৯১। গুপ্তচরাঃ কতিবিধাঃ ভবন্তি ? কে চ তে ?

উত্তরঃ অষ্টবিধাঃ—কাপটিক—উদাস্থিত—গৃহপতিক—তাপসব্যাখ্যান—সত্রি—

তীক্ষ্ণ—রসদ—বৈদেহব্যক্তকশ্চ।

উঃ অষ্টবিধাঃ—কাপটিক—উদাস্থিত—গৃহপতিক—তাপসব্যাখ্যান—সত্রি—তীক্ষ্ণ—রসদ

বৈদেহব্যক্তকশ্চ।

১৯২। গুপ্তচর কয় প্রকারের ও কি কি ?

উঃ আট প্রকারের - কাপটিক, উদাস্থিত, গৃহপতিক, তাপসব্যাখ্যান, সত্রি, তীক্ষ্ণ, রসদ ও
বৈদেহকব্যাখ্যান।

১৯৩। কাপটিকঃ গুপ্তচরঃ কঃ ভবতি ?

১৯৪। কাপটিকঃ গুপ্তচরঃ কঃ ভবতি ?

উত্তরঃ কপটবৃত্তিপরায়ণঃ ছাত্রাধ্যাপকশ্চ।

উঃ কপটবৃত্তিপরায়ণঃ ছাত্রাধ্যাপকশ্চ।

১৯৫। কাপটিক গুপ্তচরের প্রকৃতি কি ?

উঃ কপটবৃত্তিপরায়ণ ছাত্র-অধ্যাপক প্রভৃতি।

১৯৬। উদাস্থিতঃ দূতঃ কঃ ভবতি ?

১৯৭। উদাস্থিতঃ দূতঃ কঃ ভবতি ?

- उत्तरः उदासीनः सन्यासी—प्रवृज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः उदस्थितः ।
 उः उदासीनः सन्यासी—प्रवृज्या प्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः उदस्थितः ।
- १८२। उदास्थित दृत के? ।
 उः उदासीन सन्यासी—प्रवृज्या प्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्तः उदस्थितः ।
- १८३। गृहपतिकः गुप्तचरः कः भवति? ।
 १८४। गृहपतिकः गुप्तचरः कः भवति?
- उत्तरः गृहस्थः गृहकर्ता—कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः गृहपतिकव्यञ्जनः ।
 उः गृहस्थः गृहकर्ता—कर्षको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः गृहपतिकव्यञ्जनः ।
- १८५। गृहपतिक गुप्तचर के? ।
 उः गृहस्थः प्राणिक गृहकर्ता ।
- १८६। तापसव्यञ्जनः गुप्तचरः कः भवति? ।
 १८७। तापसव्यञ्जनः गुप्तचरः कः भवति?
- उत्तरः तापसी सन्यासी—मुण्डजटिलः वा वृत्तिकामः ।
 उः तापसी सन्यासी—मुण्डजटिलः वा वृत्तिकामः ।
- १८८। तापसव्यञ्जन गुप्तचर के? ।
 उः छान्वेणी तापसी, सन्यासी ।
- १८९। सत्रि गुप्तचरः कः भवति? ।
 १९०। सत्रि गुप्तचरः कः भवति?
- उत्तरः विविधशास्त्राध्ययनकारी गुप्तचरः ।
 उः विविधशास्त्राध्ययनकारी गुप्तचरः ।
- १९१। सत्रि गुप्तचर के? ।
 उः विविध शास्त्राध्ययनकारी गुप्तचर ।
- १९२। तीक्ष्णगुप्तचरश्च कः? ।
 १९३। तीक्ष्णगुप्तचरश्च कः?
- उत्तरः साहसिकः गुप्तचरः ।
 उः साहसिकः गुप्तचरः ।
- १९४। तीक्ष्ण गुप्तचर के? ।
 उः साहसिक गुप्तचर ।

- १९५। रसदः गुप्तचरः कः भवति? ।
 १९६। रसदः शुद्धचरः कः भवति?
- उत्तरः विषप्रदानकारी गुप्तचरः ।
 उः विषप्रदानकारी शुद्धचरः ।
- १९७। रसद शुद्धचर के? ।
 उः विषप्रदानकारी शुद्धचर ।
- १९८। वैदेहकव्यञ्जनः गुप्तचरः कः भवति? ।
 १९९। वैदेहकव्यञ्जनः गुप्तचरः कः भवति?
- उत्तरः वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः वैदेहकव्यञ्जनः ।
 उः वाणिजको वृत्तिक्षीणः प्रज्ञाशौचयुक्तः वैदेहकव्यञ्जनः ।
- २००। वैदेहक गुप्तचर के? ।
 उः प्रज्ञा ओ शुचिता युक्त श्चीयन्वति विषिक् ।
- २०१। पञ्चसंस्थाः काः भवति? ।
 २०२। पञ्चसंस्थाः काः भवति?
- उत्तरः कापटिक—उदास्थित—गृहपातिक—तापसव्यञ्जन—वैदेहकव्यञ्जनश्चेति पञ्चसंस्थाः भवति ।
 उः कापटिक-उदास्थित-गृहपातिक-तापसव्यञ्जन-वैदेहकव्यञ्जनश्चेति पञ्चसंस्थाः भवति ।
- २०३। पञ्चसंस्थ कि? ।
 उः कापटिक, उदास्थित, गृहपातिक, तापसव्यञ्जन ओ वैदेहकव्यञ्जन — एই पञ्चगुप्तचरके पञ्चसंस्थ बला हय ।
- २०४। निमित्तशास्त्रं किम्? ।
 २०५। निमित्तशास्त्रं किम्?
- उत्तरः शुभाशुभविषयकं शकुनशास्त्रम् ।
 उः शुभाशुभविषयकं शकुनशास्त्रम् ।
- २०६। निमित्तशास्त्रं कि? ।
 उः शुभाशुभविषयक शकुनशास्त्र ।
- २०७। व्यालं किं भवति? ।
 २०८। व्यालं किं भवति?
- उत्तरः सर्पव्याप्रादयः हिंसनन्तवः ।

- উঃ সর্পব্যাঘাদয়ঃ হিংসজন্তবঃ।
 ১৯১। 'বান' কথার অর্থ কি?
 উঃ সর্ব বাণ প্রভৃতি হিংস জন্ম।
 ১৯২. মন্ত্রী ক: ভবতি?
 ১৯২। মন্ত্রী কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ অমাত্যেষু প্রধানঃ বিদ্঵ান् ব্রাহ্মণঃ।
 উঃ অমাত্যেষু প্রধানঃ বিদ্঵ান् ব্রাহ্মণঃ।
 ১৯২। মন্ত্রী কে হবেন?
 উঃ অমাত্যদের মধ্যে প্রধান বিদ্঵ান् ব্রাহ্মণ।
 ১৯৩. দৌৱাৰিকঃ ক: ভবতি?
 ১৯৩। দৌৱাৰিকঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ রাজকুলস্য প্রধানঃ প্রতিহারী।
 উঃ রাজকুলস্য প্রধানঃ প্রতিহারী।
 ১৯৩। দৌৱাৰিক কে?
 উঃ রাজকুলের প্রধান প্রতিহারী।
 ১৯৪. প্রশাস্তা ক: ভবতি?
 ১৯৪। প্রশাস্তা কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ কারাধ্যক্ষঃ।
 উঃ কারাধ্যক্ষঃ।
 ১৯৪। প্রশাস্তা কে?
 উঃ কারাধ্যক্ষঃ।
 ১৯৫. সমাহর্তা ক: ভবতি?
 ১৯৫। সমাহর্তা কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ রাজস্বসংগ্রহাধ্যক্ষঃ।
 উঃ রাজস্বসংগ্রহাধ্যক্ষঃ।
 ১৯৫। সমাহর্তা কে?
 উঃ রাজস্বসংগ্রহাধ্যক্ষঃ।
 ১৯৬. সন্নিধাতা ক: ভবতি?
 ১৯৬। সন্নিধাতা কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ রাজকৌপরক্ষায় নিযুক্তঃ আধিকারিকঃ।

- উঃ রাজকৌপরক্ষায় নিযুক্তঃ আধিকারিকঃ।
 ১৯৬। সন্নিধাতা কে?
 উঃ রাজকৌপাধ্যক্ষঃ।
 ১৯৭. নাযকঃ ক: ভবতি?
 ১৯৭। নাযকঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ পদাতিকসেন্যসহস্রানাম্য অধ্যক্ষঃ।
 উঃ পদাতিকসেন্যসহস্রানাম্য অধ্যক্ষঃ।
 ১৯৭। নাযক কে?
 উঃ সহস্রস্থ্যক পদাতিক সৈন্যবাহিনীর প্রধান।
 ১৯৮. পৌরব্যবহারিকঃ ক: ভবতি?
 ১৯৮। পৌরব্যবহারিকঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ প্রাড়বিবাকঃ।
 উঃ প্রাড়বিবাকঃ।
 ১৯৮। পৌরব্যবহারিক কে?
 উঃ প্রাড়বিবাকঃ।
 ১৯৯. কার্মান্তিকঃ ক: ভবতি?
 ১৯৯। কার্মান্তিকঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ আকরাধ্যক্ষঃ শিল্পাধ্যক্ষশ্চ।
 উঃ আকরাধ্যক্ষঃ শিল্পাধ্যক্ষশ্চ।
 ১৯৯। কার্মান্তিক কে?
 উঃ খনি ও শিল্পসংস্থানের অধ্যক্ষঃ।
 ২০০. মন্ত্রিপরিষদাধ্যক্ষঃ ক: ভবতি?
 ২০০। মন্ত্রিপরিষদাধ্যক্ষঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ মন্ত্রণাসভায়ঃ অধ্যক্ষঃ (Speaker)।
 উঃ মন্ত্রণাসভায়ঃ অধ্যক্ষঃ (Speaker)।
 ২০০। মন্ত্রিপরিষদের অধ্যক্ষ কে?
 উঃ মন্ত্রণাসভার প্রধান (Speaker)।
 ২০১. দণ্ডপালঃ ক: ভবতি?
 ২০১। দণ্ডপালঃ কঃ ভবতি?
 উত্তরঃ সৈন্যাধ্যক্ষঃ।
 অর্থশাস্ত্রম্-২০

- उः सैनाध्यक्षः।
 २०१। दुर्गपाल के?
 उः सैनाध्यक्ष।
 २०२। दुर्गपालः कः भवति?
 उत्तरः दुर्गाध्यक्षः।
 उः दुर्गाध्यक्षः।
 २०२। दुर्गपाल के?
 उः दुर्गाध्यक्ष।
 २०३। अन्तःपालः कः भवति?
 २०३। अस्तुपालः कः भवति?
 उत्तरः सीमारक्षकः।
 उः सीमारक्षकः।
 २०३। अस्तुपाल के?
 उः सीमास्तुपक्षाय प्रधान आधिकारिक।
 २०४। आटविकः कः भवति?
 २०४। आटविकः कः भवति?
 उत्तरः वनाञ्जलाध्यक्षः।
 उः वनाञ्जलाध्यक्षः।
 २०४। आटविक के?
 उः वनाञ्जलाध्यक्ष।
 २०५। महामात्याः कति संख्यकाः भवन्ति?
 २०५। महामात्याः कति संख्यकाः भवन्ति?
 उत्तरः अष्टादशसंख्यकाः।
 उः अष्टादशसंख्यकाः।
 २०५। महामात्यात्तेर संख्या कत?
 उः आठार।
 २०६। 'उभयवेतनः गुमचरः कीदूशः भवति?
 २०६। 'उभयवेतनः गुमचरः कीदूशः भवति?
 उत्तरः विजिगीषु तथा शत्रुः—उभययोः वृत्तिभोगी गुमचरः उभयवेतनः।

- उः विजिगीषु तथा शत्रुः— उभयन् गमयोः वृत्तिभोगी गुमचरः उभयवेतनः।
 २०६। 'उभयवेतन' गुमचर कि?
 उः विजिगीषु ओ शत्रुराजा — उभययोर वृत्तिभोगी राजकर्त्तारी।
 २०७। 'उपजाप' शब्दस्य कोइर्थः?
 २०७। 'उपजाप' शब्दस्य कोइर्थः?
 उत्तरः भेदोपायेन प्रजाक्षीकरणम्।
 उः भेदोपायेन प्रजाक्षीकरणम्।
 २०७। 'उपजाप' कथार अर्थ कि?
 उः भेद उपायेन माध्यमे विद्रोह दमन।
 २०८। के तावत् कृत्यपक्षीयाः?
 २०८। के तावत् कृत्यपक्षीयाः?
 उत्तरः प्रलृप्त्याः शत्रुपक्षीयाः जनाः।
 उः प्रलृप्त्याः शत्रुपक्षीयाः जनाः।
 २०८। 'कृत्यपक्ष' कारा?
 उः प्रलृप्त्य शत्रुपक्षीय वृत्तिवर्ग।
 २०९। के च अकृत्यपक्षीयाः?
 २०९। के च अकृत्यपक्षीयाः?
 उत्तरः प्रलोभनेनापि शत्रुपक्षे योगदानविमुखाः।
 उः प्रलोभनेनापि शत्रुपक्षे योगदानविमुखाः।
 २०९। 'अकृत्यपक्ष' कारा?
 उः प्रलोभनेऽपि शत्रुपक्षे योगदाने विमुख वृत्ति।
 २१०। 'भिक्षुकी' का भवति?
 २१०। 'भिक्षुकी' का भवति?
 उत्तरः वौद्धसम्यासिनी।
 उः वौद्धसम्यासिनी।
 २१०। 'भिक्षुकी' के?
 उः वौद्धसम्यासिनी।
 २११। मात्स्यन्यायशब्दस्य कोइर्थः?
 २११। मात्स्यन्यायशब्दस्य कोइर्थः?
 उत्तरः अराजकता।

उः अराजकता।

२११। 'मात्स्यनाश' शब्देर अर्थ कि?

उः अराजकता।

२१२। अर्थशास्त्रानुसारं प्रथमः राजा कः आसीत्?

२१२। अर्थशास्त्रानुसारं प्रथमः राजा कः आसीत्?

उत्तरः वैवस्वतः मनुः।

उः बैवस्वतः मनुः।

२१३। अर्थशास्त्रमेति प्रथम राजा के?

उः बैवस्वत मनु।

२१३. 'योगक्षेमशब्दस्य कोऽर्थः?

२१३। 'योगक्षेमस्य कोऽर्थः?

उत्तरः अप्राप्तिविषयस्य प्राप्तिः योगः, प्राप्तिविषयस्य रक्षणं क्षेमम्।

उः अप्राप्तिविषयस्य प्राप्तिः योगः, प्राप्तिविषयस्य रक्षणं क्षेमम्।

२१३। 'योगक्षेम' कि?

उः 'योगक्षेम' राजनीति शास्त्रेर एकति पारिभाषिक शब्द, यार अर्थ रक्षणावेक्षण।

२१४. धान्यादिशस्यानां कियदंशः राजकररूपेण प्रदेयः?

२१४। धान्यादिशस्यानां कियदंशः राजकररूपेण प्रदेयः?

उत्तरः पड्डभागम्।

उः वड्डभागम्।

२१५। ध्यानादि उत्पन्नशस्येर कि परिमाणं राजकर हिसेबे प्रदेयः?

उः छ्याभाग।

२१५. पण्यानां कियदंशः कररूपेण प्रदेयः?

२१५। पण्यानां कियदंशः कररूपेण प्रदेयः?

उत्तरः दशभागम्।

उः दशभागम्।

२१५। पण्यानामधीति कृत अश्च राजकर हिसेबे प्रदेयः?

उः दशभाग।

२१६. हिरण्यस्य कियदंशः राजकरः भवति?

२१६। हिरण्यस्य कियदंशः राजकरः भवति?

उत्तरः दशभागम्।

उः दशभागम्।

२१६। हिरण्य प्रभृति खनिज पदार्थेर कृत अश्च राजकर हिसेबे प्रदेयः?

उः दशभाग।

२१७. राजानः कथं नावमन्तव्याः?

२१७। राजानः कथं नावमन्तव्याः?

उत्तरः राजा ईश्वरः सृष्टः दण्डधरः। अथ स नावमन्तव्यः।

उः राजा ईश्वरः सृष्टः दण्डधरः। अथ स नावमन्तव्यः।

२१८। राजाके केन आवमनना करा उचित नयः?

उः कारण राजा ईश्वरसृष्टे नाय दण्डधर।

२१८. 'मन्त्रः' इत्यस्य कोऽर्थः?

२१८। 'मन्त्रः' इत्यस्य कोऽर्थः?

उत्तरः मन्त्रणा तथा परिकल्पना।

उः मन्त्रणा तथा परिकल्पना।

२१९। 'मन्त्र' कथार अर्थ कि?

उः मन्त्रणा तथा परिकल्पना।

२१९. 'मन्त्रपूर्वाः सर्वारम्भाः' — केन उक्तः?

२१९। 'मन्त्रपूर्वाः सर्वारम्भाः' — केन उक्तः?

उत्तरः आचार्येन कौटिल्येन।

उः आचार्येन कौटिल्येन।

२१९। 'मन्त्रपूर्वाः सर्वारम्भाः' — कार उक्तिः?

उः आचार्य कौटिल्येन।

२२०. मन्त्रणागृहं कीदृशं भवेत्?

२२०। मन्त्रणागृहं कीदृशं भवेत्?

उत्तरः सुनिभृतं सुरक्षितञ्च भवेत्।

उः सुनिभृतं सुरक्षितञ्च भवेत्।

२२०। मन्त्रणागृहं किरकम इवे?

२२०। मन्त्रणागृहं किरकम इवे?

उः सुनिभृत ओ सुरक्षित।

२२१. कामिः तिर्यग्योनिभिः मन्त्रभेदः भवेत्?

२२१। कामिः तिर्यग्योनिभिः मन्त्रभेदः भवेत्?

उत्तरः श्वभिः शुकसारिकापिः पक्षिभिः मन्त्रभेदः जायते।

कोटिलीयम् अर्थशास्त्रम्

३१०

उः शुद्धिः शुक्लारिकाभिः पक्षिभिः मन्त्रभेदः जायते।

२२१। कोन् कोन् तिर्यक् योनि द्वारा मन्त्रभेदेर आशङ्का थाके?

उः कुकुर, शुक्लारिका प्राणित्रिं द्वारा।

२२२। कीदृष्टैः जनैः मन्त्रभेदः जायते?

२२२। कीदृष्टैः जनैः मन्त्रभेदः जायते?

उत्तरः दूतामात्यस्वामिनाम् इङ्गिताकारादिभिः मन्त्रभेदः भवति।

उः दूतामात्यस्वामिनाम् इङ्गिताकारादिभिः मन्त्रभेदः भवति।

२२३। कादेर द्वारा किभाबे मन्त्रभेद हते पारे?

उः दृढ़-अमात्य-स्थामि प्राणित्रिं आकार ओ इंगितेर माध्यमे मन्त्रभेदे हते पारे।

२२३। इङ्गितं किम्?

२२४। इङ्गित किम्?

उत्तरः इङ्गितम् अन्यथावृत्तिः।

उः इङ्गितम् अन्यथावृत्तिः।

२२५। इङ्गित कि?

उः अन्यथावृत्ति इङ्गित।

२२६। आकारः कः भवति?

२२७। आकारः कः भवति?

उत्तरः आकृतिग्रहणम् आकारः।

उः आकृतिग्रहणम् आकारः।

२२८। आकार कि?

उः आकृति शृण्खे आकार।

२२९। कियत्क्षणं मन्त्ररक्षणं करणीयम्?

२२१। कियत्क्षणं मन्त्ररक्षणं करणीयम्?

उत्तरः कार्यसमाप्तिकालपर्यन्तम्।

उः कार्यसमाप्तिकालपर्यन्तम्।

२२१। कियत्क्षणं पर्यन्तं मन्त्ररक्षणं करते हवे?

उः कार्येर समाप्ति पर्यन्तं मन्त्ररक्षणं कर्त्तव्य।

२२६। मन्त्रणाविषये भारद्वाजस्य परामर्शः कः भवति?

२२७। मन्त्रणाविषये भारद्वाजस्य परामर्शः कः भवति?

उत्तरः 'गुह्यमेको मन्त्रयते'—राजा स्वयम् एकः मन्त्रयते।

उः 'गुह्यमेको मन्त्रयते'—राजा द्वयम् एकः मन्त्रयते।

२२६। मन्त्रणा विषये भारद्वाजेर परामर्श कि?

उः गोपन विषये राजा एकाकी-मन्त्रणा करबेन 'गुह्यमेके मन्त्रयते'।

२२७। राजा कथम् एकाकी मन्त्रयते?

२२८। राजा कथम् एकाकी मन्त्रयते?

उत्तरः मन्त्रिणामपिमन्त्रणो भवन्ति, तेषामपि अन्ये—इत्थं मन्त्रभेदस्य आशङ्का जायते। अथ भारद्वाजानुसारं राजा स्वयम् मन्त्रयते।

उः मन्त्रिणामपिमन्त्रिणो भवन्ति, तेषामपि अन्ये—इत्थं मन्त्रभेदस्य आशङ्का जायते। अथ भारद्वाजानुसारं राजा द्वयः मन्त्रयते।

२२९। केन राजा एकाकी मन्त्रणा करबेन?

उः मन्त्रीदेवो मन्त्री आहे, तांदेवो आवार अन्य मन्त्रणादाता राहेचे। एडावे पारम्परिक कथावार्ताय मन्त्रभेदे हते पारे। ताहे राजा गुरुत्पूर्ण विषये एकाहि मन्त्रणा करबेन।

२२१। 'नैकस्य मन्त्रसिद्धिरस्ति' इति केन उक्तः?

२२८। 'नैकस्य मन्त्रसिद्धिरस्ति' इति केन उक्तः?

उत्तरः आचार्येण विशालाक्षेण।

उः आचार्येण विशालाक्षेण।

२२८। 'नैकस्य मन्त्रसिद्धिरस्ति' एकथा बलेचेन।

उः आचार्य विशालाक्ष।

२२९। राजवृत्तिः कीदृशी भवति?

२२१। राजवृत्तिः कीदृशी भवति?

उत्तरः प्रत्यक्षपेराक्षानुमेया हि राजवृत्तिः।

उः प्रत्यक्षपेराक्षानुमेया हि राजवृत्तिः।

२२१। राजवृत्ति कठ प्रकारेर हय?

उः तिन प्रकारेर — प्रत्यक्ष, परोक्ष ओ अनुमेय।

२३०। भारद्वाजानुसारं राजा कैः सह मन्त्रयते?

२३०। भारद्वाजानुसारं राजा कैः सह मन्त्रयते?

उत्तरः राजा तुद्धिवृद्धेः सह मन्त्रयते।

उः राजा तुद्धिवृद्धेः सह मन्त्रयते।

२३०। भारद्वाज एव मते राजा कार साथे मन्त्रणा करबेन?

উঃ জ্ঞানবৃক্ষদের সাথে।

২৩১। 'বালস্যাপ্যর্থবদ্বাক্যমুপযুক্তীত পণ্ডিতঃ'—কেন উক্তম्?

২৩১। 'বালস্যাপ্যর্থবদ্বাক্যমুপযুক্তীত পণ্ডিতঃ'—কেন উক্তম্?

উত্তরঃ আচার্যেণ বিশালাক্ষণে।

উঃ আচার্যেণ বিশালাক্ষণে।

২৩১। 'বালস্যাপ্যর্থবদ্বাক্যমুপযুক্তীত পণ্ডিতঃ'—কার উক্তি?

২৩২। 'এতন্মতজ্ঞানং নৈতন্মন্ত্ররক্ষণম্'—ইতি কস্য উক্তিঃ?

২৩২। 'এতন্মতজ্ঞানং নৈতন্মন্ত্ররক্ষণম্'—ইতি কস্য উক্তিঃ?

উত্তরঃ আচার্যস্য পরাশরস্য।

উঃ আচার্যস্য পরাশরস্য।

২৩২। 'এতন্মতজ্ঞানং নৈতন্মন্ত্ররক্ষণম্'—কার উক্তি?

উঃ আচার্য পরাশরের।

২৩৩। মন্ত্রণা঵িষয়ে পরাশরস্য অভিমতং কিমস্তি?

২৩৩। মন্ত্রণাবিষয়ে পরাশরস্য অভিমতং কিমস্তি?

উত্তরঃ মন্ত্রণাম্ উপলক্ষ্যে জ্ঞাত্বা রাজা স্বয়ং মন্ত্রযৈত্।

উঃ মন্ত্রণাম্ উপলক্ষ্যে জ্ঞাত্বা রাজা স্বয়ং মন্ত্রযৈত্।

২৩৩। মন্ত্রণাবিষয়ে পরাশরের অভিমত কি?

উঃ মন্ত্রণাদের উপলক্ষ্যে জ্ঞানে রাজা স্বয়ং মন্ত্রণা করবেন।

২৩৪। মন্ত্রণা বিষয়ে আচার্যস্য পিণ্ডুনস্য পরামর্শঃ কঃ ভবতি?

২৩৪। মন্ত্রণা বিষয়ে আচার্যস্য পিণ্ডুনস্য পরামর্শঃ কঃ ভবতি?

উত্তরঃ যেন্ত্রু কর্মসূ যে অভিপ্রেতাঃ রাজা তৈঃ সহ মন্ত্রণাং কুর্যাত্।

উঃ যেন্ত্রু কর্মসূ যে অভিপ্রেতাঃ রাজা তৈঃ সহ মন্ত্রণাং কুর্যাত্।

২৩৪। মন্ত্রণা বিষয়ে আচার্য পিণ্ডুনের অভিমত কি?

উঃ যাঁরা যে বিষয়ে অভিজ্ঞ, রাজা সেই বিষয়ে তাঁদের সাথেই মন্ত্রণা করবেন।

২৩৫। মন্ত্রণা঵িষয়ে কাঁটিল্যস্য পরামর্শঃ কোত্তিঃ?

২৩৫। মন্ত্রণাবিষয়ে কোটিল্যস্য পরামর্শঃ কোত্তিঃ?

উত্তরঃ দেশকালকার্যবশাত্ রাজা একেন দ্বাভ্যাং বা মন্ত্রিভিঃ সহ মন্ত্রযৈত্।

উঃ দেশকালকার্যবশাত্ রাজা একেন দ্বাভ্যাং বা মন্ত্রিভিঃ সহ মন্ত্রযৈত্।

২৩৫। মন্ত্রণা বিষয়ে কোটিল্যের পরামর্শ কি?

উঃ দেশ-কাল ও কার্যের গুরুত্ব অনুসারে রাজা একজন বা দুজন মন্ত্রীর সাথে রাজা মন্ত্রণা করবেন।

২৩৬। মন্ত্রণাযাঃ কানি অঞ্জানি সন্তি?

২৩৬। মন্ত্রণাযাঃ কানি অঞ্জানি সন্তি?

উত্তরঃ পঞ্চবিধানি।

উঃ পঞ্চবিধানি।

২৩৬। মন্ত্রণার কয়টি অঙ্গা?

উঃ পাঁচটি।

২৩৭। কানি তাবত্ মন্ত্রপঞ্জাঙ্গানি?

২৩৭। কানি তাবৎ মন্ত্রপঞ্জাঙ্গানি?

উত্তরঃ কর্মণামারঞ্জোপায়ঃ, পুরুষদ্ব্যসম্পত্তি, দেশকালবিভাগঃ, বিনিপাতপ্রতিকারঃ কার্যসিদ্ধিশৈতি।

উঃ কর্মণামারঞ্জোপায়ঃ, পুরুষ দ্ব্যসম্পত্তি, দেশকালবিভাগঃ, বিনিপাতপ্রতিকারঃ কার্যসিদ্ধিশৈতি।

২৩৭। মন্ত্রণার অঙ্গ পাঁচটি কি কি?

উঃ কর্মারঙ্গের উপায়, পুরুষ দ্ব্যসম্পত্তি, দেশকাল বিভাগ, বিনিপাত প্রতিকার ও কার্যসিদ্ধি।

২৩৮। মানবানুসারং মন্ত্রিপরিষদি অমাত্যসংজ্ঞ্যা কা ভবেত্?

২৩৮। মানবানুসারং মন্ত্রিপরিষদি অমাত্যসংজ্ঞ্যা কা ভবেত্?

উত্তরঃ দ্বাদশঃ অমাত্যাঃ।

উঃ দ্বাদশঃ অমাত্যাঃ।

২৩৮। মনুর মতে মন্ত্রণার সংখ্যা কত হবে।

উঃ দ্বাদশ।

২৩৯। বার্হস্পত্যানুসারং মন্ত্রিণাং সংজ্ঞা কা স্থাত্?

২৩৯। বার্হস্পত্যানুসারং মন্ত্রিণাং সংজ্ঞা কা স্থাত্?

উত্তরঃ ঘোড়শঃ অমাত্যাঃ।

উঃ ঘোড়শঃ অমাত্যাঃ।

২৩৯। বার্হস্পত্যানুসারে মন্ত্রিসংখ্যা কত হওয়া উচিত?

উঃ ঘোল জন।

২৪০। ঔশনসাঃ মন্ত্রিণাং সংজ্ঞাবিষয়ে কি পরামৃষ্টি?

২৪০। ইশনসাঃ মন্ত্রিগাং সংখ্যাবিষয়ে কিৎ পরামৃষ্টি?

উত্তর: বিশ্বতিঃ অমাত্যাঃ।

উঃ বিশ্বতিঃ অমাত্যাঃ।

২৪০। শুকুচার্যের অনুগামীদের মতে মন্ত্রিসংখ্যা কত হওয়া উচিত?

উঃ বিশ্বতি।

২৪১. মন্ত্রিসংখ্যা বিষয়ে কৌটিল্যঃ কিৎ পরামৃষ্টি?

২৪১। মন্ত্রিসংখ্যা বিষয়ে কৌটিল্যঃ কিৎ পরামৃষ্টি?

উত্তর: যথাসামর্থ্যম্ ইতি।

উঃ যথাসামর্থ্যম্ ইতি।

২৪১। মন্ত্রীদের সংখ্যা বিষয়ে কৌটিল্যের অভিমত কি?

উঃ যতজন প্রয়োজন, রাজা ততজন মন্ত্রী নিয়োগ করবেন।

২৪২. কৈৎ সহ রাজা কার্যাণি পঞ্চেত?

২৪২। কৈৎ সহ রাজা কার্যাণি পঞ্চেত?

উত্তর: আসন্নৈঃ উপস্থিতেঃ মন্ত্রিভিঃ সহ রাজা কার্যং পঞ্চেত।

উঃ আসন্নৈঃ উপস্থিতেঃ মন্ত্রিভিঃ সহ রাজা কার্যং পঞ্চেত।

২৪২। রাজা কাদের সাথে কার্য বিষয় আলোচনা করবেন?

উঃ উপস্থিত মন্ত্রিবর্গের সাথে।

২৪৩. ইন্দ্রস্য সভাযাং কিয়ন্তঃ মন্ত্রিণঃ আসন্ন?

২৪৩। ইন্দ্রস্য সভাযাং কিয়ন্তঃ মন্ত্রিণঃ আসন্ন?

উত্তর: সহস্ত্রম্।

উঃ সহস্ত্রম্।

২৪৩। ইন্দ্রসভায় মন্ত্রীদের সংখ্যা কত ছিল?

উঃ এক হাজার।

২৪৪. সহস্রাক্ষঃ কৎ আসীত्?

২৪৪। সহস্রাক্ষঃ কৎ আসীত্?

উত্তর: দেবরাজঃ ইন্দ্রঃ।

উঃ দেবরাজঃ ইন্দ্রঃ।

২৪৪। 'সহস্রাক্ষ' কে?

উঃ দেবরাজ ইন্দ্র।

২৪৫. ইন্দ্রঃ কথম সহস্রাক্ষঃ ইত্যভিধাং প্রাপ্তবান्?

২৪৫। ইন্দ্রঃ কথৎ সহস্রাক্ষঃ ইত্যভিধাং প্রাপ্তবান्?

উত্তর: ইন্দ্রসভাযাং সহস্র মন্ত্রিণঃ আসন্ন। তস্মাত্ ইন্দ্রঃ সহস্রাক্ষঃ ইতি খ্যাতঃ।

উঃ ইন্দ্রসভাযাং সহস্র মন্ত্রিণঃ আসন্ন। তস্মাত্ ইন্দ্রঃ সহস্রাক্ষঃ ইতি খ্যাতঃ।

২৪৫। ইন্দ্রকে সহস্রাক্ষ বলা হয় কেন?

উঃ ইন্দ্রসভায় সহস্র মন্ত্রী ছিলেন বলে ইন্দ্রকে সহস্রাক্ষ বলা হয়।

২৪৬. রাজা: চক্ষুঃ কে ভবন্তি?

২৪৬। রাজজ্ঞ চক্ষুঃ কে ভবন্তি?

উত্তর: মন্ত্রিণঃ।

উঃ মন্ত্রিণঃ।

২৪৬। রাজা চক্ষু কে?

উঃ মন্ত্রিণঃ।

২৪৭. রাজা কেন ইন্দ্রিয়েন পঞ্চেতি?

২৪৭। রাজা কেন ইন্দ্রিয়েন পঞ্চেতি?

উত্তর: কর্ণেন।

উঃ কর্ণেন।

২৪৭। রাজা কোন ইন্দ্রিয়ের দ্বারা দেখেন?

উঃ কর্ণ দিয়ে।

২৪৮. আত্মরক্ষণে রাজা: দৃষ্টান্তঃ কৎ ভবতি?

২৪৮। আত্মরক্ষণে রাজজ্ঞ দৃষ্টান্তঃ কৎ ভবতি?

উত্তর: কূর্মঃ।

উঃ কূর্ম।

২৪৮। আত্মরক্ষণে রাজজ্ঞ দৃষ্টান্ত কি?

উঃ কূর্ম।

২৪৯. শ্রোত্রিয়শব্দস্য কোর্থঃ?

২৪৯। শ্রোত্রিয়শব্দস্য কোর্থঃ?

উত্তর: বেদবিত্।

উঃ বেদবিত্।

২৪৯। শ্রোত্রিয়শব্দের অর্থ কি?

উঃ বেদবিত্ কে।

২৫০. দূতঃ কৎ ভবতি?

୨୫୦। ଦୂତଃ କଃ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ବାର୍ତ୍ତାବହ : ।

ଓଃ ବାର୍ତ୍ତାବହ : ।

୨୫୦। ଦୂତ କେ ?

ଓଃ ବାର୍ତ୍ତାବହ ।

୨୫୧. ଦୂତ: କତିବିଧଃ ଭବତି ?

୨୫୧। ଦୂତଃ କତିବିଧଃ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ତ୍ରିଵିଧଃ ।

ଓଃ ତ୍ରିଵିଧଃ ।

୨୫୧। ଦୂତ କତ ପ୍ରକାରେର ?

ଓଃ ତିନ ପ୍ରକାରେର ।

୨୫୨. ଦୂତସ୍ୟ ବିଭାଗତର୍ୟ କିମ୍ବିତ ?

୨୫୨। ଦୂତସ୍ୟ ବିଭାଗତର୍ୟ କିମ୍ବିତ ?

ଉତ୍ତର: ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ: , ପରିମିତାର୍ଥ: ଶାସନହରଶ୍ଚ ।

ଓଃ ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ: , ପରିମିତାର୍ଥ: ଶାସନହରଶ୍ଚ ।

୨୫୨। ଦୂତେର ବିଭାଗ ତିନଟି କି କି ?

ଓଃ ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ, ପରିମିତାର୍ଥ ଓ ଶାସନହର ।

୨୫୩. ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ: ଦୂତ: କ: ଭବତି ?

୨୫୩। ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ: ଦୂତଃ କଃ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ଅମାତ୍ୟଗୁଣୋପେତ: ଦୂତ: ।

ଓଃ ଅମାତ୍ୟଗୁଣୋପେତଃ ଦୂତଃ ।

୨୫୩। ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ ଦୂତ କେ ?

ଓଃ ଅମାତ୍ୟେର ସମଗ୍ରେସମ୍ପନ୍ନ ଦୂତ ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ ।

୨୫୪. ପରିମିତାର୍ଥ: ଦୂତ: କ: ଭବତି ?

୨୫୪। ପରିମିତାର୍ଥ: ଦୂତଃ କଃ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ଅମାତ୍ୟଗୁଣାତ୍ ପାଦଗୁଣହିନ: ଦୂତ: ପରିମିତାର୍ଥ: ।

ଓଃ ଅମାତ୍ୟଗୁଣାତ୍ ପାଦଗୁଣହିନଃ ଦୂତଃ ପରିମିତାର୍ଥ: ।

୨୫୪। ପରିମିତାର୍ଥ ଦୂତ କେ ?

ଓଃ ଅମାତ୍ୟଗୁଣେର ଏକଭାଗ କମ ଗୁଣସମ୍ପନ୍ନ ଦୂତ ପରିମିତାର୍ଥ ।

୨୫୫. ଶାସନହରଶ୍ଚ କ: ?

୨୫୫। ଶାସନହରଶ କଃ ?

ଉତ୍ତର: ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥଦୂତାତ୍ ଅର୍ଧଗୁଣହିନ: ଶାସନହର: ।

ଓଃ ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥଦୂତାତ୍ ଅର୍ଦ୍ଧଗୁଣହିନଃ ଶାସନହରଃ ।

୨୫୫। ଶାସନହର ଦୂତ କେ ?

ଓଃ ନିସୃଷ୍ଟାର୍ଥ ଦୂତେର ଅର୍ଦ୍ଧଗୁଣ ସମ୍ପନ୍ନ ଦୂତ ଶାସନହର ।

୨୫୬. ରାଜଃ ମୁଖଂ କିଂ ଭବତି ?

୨୫୬। ରାଜ୍ଞି ମୁଖଂ କିଂ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ଦୂତମୁଖା: ହି ରାଜାନ: । ଦୂତ: ଏବ ରାଜଃ ମୁଖମ୍ ।

ଓଃ ଦୂତମୁଖା: ହି ରାଜାନଃ । ଦୂତଃ ଏବ ରାଜ୍ଞି ମୁଖମ୍ ।

୨୫୬। ରାଜାର ମୁଖ କି ?

ଓଃ ଦୂତର ରାଜାର ମୁଖ ।

୨୫୭. ଦୂତଧର୍ମ: କ: ଭବତି ?

୨୫୭। ଦୂତଧର୍ମ: କଃ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ପରପ୍ରୀତିଂ ବାକ୍ୟପରିବେଶନଂ ଦୂତଧର୍ମ: ।

ଓଃ ପରପ୍ରୀତିଂ ବାକ୍ୟ ପରିବେଶନଂ ଦୂତଧର୍ମ: ।

୨୫୭। ଦୂତର ଧର୍ମ କି ?

ଓଃ ପରପ୍ରୀତି ବାକ୍ୟ ପରିବେଶନ ।

୨୫୮. ଦୂତକାର୍ଯ୍ୟ କିଂ ଭବତି ?

୨୫୮। ଦୂତକାର୍ଯ୍ୟ କିଂ ଭବତି ?

ଉତ୍ତର: ସନ୍ଧିଵିଗ୍ରହୀ ଦୂତକାର୍ଯ୍ୟ ।

ଓଃ ସନ୍ଧିବିଗ୍ରହୀ ଦୂତକାର୍ଯ୍ୟ ।

୨୫୯। ଦୂତେର ପ୍ରଧାନ କାଜ କି ?

ଓଃ ସନ୍ଧି ଓ ବିଶ୍ଵାସ ।

୨୬୦. ପାର୍ଶ୍ଵଗ୍ରାହଶବ୍ଦସ୍ୟ କୋର୍ଥ: ?

୨୬୦। ପାର୍ଶ୍ଵଗ୍ରାହଶବ୍ଦସ୍ୟ କୋର୍ଥ: ?

ଉତ୍ତର: ଶତ୍ରୁନୃପତ୍ୟ ମିତ୍ରଭୂତ: ରାଜା ପାର୍ଶ୍ଵଗ୍ରାହ: ।

ଓଃ ଶତ୍ରୁନୃପତ୍ୟ ମିତ୍ରଭୂତ: ରାଜା ପାର୍ଶ୍ଵଗ୍ରାହ: ।

୨୬୦। 'ପାର୍ଶ୍ଵଗ୍ରାହ' ଶବ୍ଦେର ଅର୍ଥ କି ?

ଓଃ ଶତ୍ରୁରାଜାର ମିତ୍ରଭୂତ ରାଜା ।

୨୬୦. 'ଆସାର: ' ଇତି କ: ଭବତି ?

२६०। 'आसारः' इति कः भवति?

उत्तरः पार्षिग्राहराजः मित्रस्थानीयः राजा आसारः।

उः पार्षिग्राहराजः मित्रस्थानीयः राजा आसारः।

२६०। 'आसार' कथारं अर्थं कि?

उः पार्षिग्राहराजार मित्रस्थानीय राजाके 'आसार' नामे अभिहित करा हय।

२६१. 'आकृन्दः' इति कः भवति?

२६१। 'आकृन्दः' इति कः भवति?

उत्तरः विजिगीषुनृपस्य मित्रनृपतिः आकृन्दः भवति।

उः विजिगीषुनृपस्य मित्रनृपतिः आकृन्दः भवति।

२६१। 'आकृन्द' कि?

उः विजिगीषु राजार मित्र नृपति हलेन 'आकृन्द'।

२६२. पार्षिग्राहासारः कः भवति?

२६२। पार्षिग्राहासारः कः भवति?

उत्तरः शत्रुनृपस्य मित्रभूतः राजा पार्षिग्राहः पार्षिग्राहस्य मित्रम् आसारः।

उः शत्रुनृपस्य मित्रभूतः राजा पार्षिग्राहः पार्षिग्राहस्य मित्रम् आसारः।

२६२। 'पार्षिग्राहासार' के?

उः शत्रुराजार मित्रभूत राजा पार्षिग्राह। आर पार्षिग्राहरे मित्र हलेन 'आसार'।

२६३. 'अर्तमूलौ हि धर्मकामौ' — केन कथितः?

२६३। 'अर्थमूलौ हि धर्मकामौ' — केन कथितः?

उत्तरः आचार्येण कौटिल्येन।

उः आचार्येण कौटिल्येन।

२६३। 'अर्थमूलौ हि धर्मकामौ' — वक्ता के?

उः आचार्य कौटिल्य।

२६४. आत्मरक्षार्थं राज्ञः पार्श्चराः के भवेयुः?

२६४। आत्मरक्षार्थं राज्ञः पार्श्चराः के भवेयुः?

उत्तरः पितृपितामहक्रमेण अनुगताः सुशिक्षिताः अमात्याः।

उः पितृपितामहक्रमेण अनुगताः सुशिक्षिताः अमात्याः।

२६४। राजार सुरक्षा बलाये कारा थाक्बेन?

उः पितृपितामह क्रमे अनुगत, सुशिक्षित अमात्यावर्ग।

२६५. के खलु जनाः राज्ञः निरापत्ताकार्ये अनुपयुक्ताः?

२६५। के खलु जनाः राज्ञः निरापत्ताकार्ये अनुपयुक्ताः?

उत्तरः असन्तुष्टाः भिन्नदेशीयाः पूर्वापकारिणञ्च।

उः असन्तुष्टाः भिन्नदेशीयाः पूर्वापकारिणञ्च।

२६५। कोन् व्यक्तिवर्ग राजार निरापत्ताय अनुपयुक्त?

उः असन्तुष्ट, भिन्नदेशीय ओ पूर्वे अपकार प्राण्य व्यक्तिवर्ग।

२६६. अन्तर्वर्शिकसैन्याः के भवन्ति?

२६६। अन्तर्वर्शिकसैन्याः के भवन्ति?

उत्तरः राजान्तःपुरे नियुक्ताः सैन्याः।

उः राजान्तःपुरे नियुक्त सैन्यगण।

२६६। अन्तर्वर्शिक सैन्य के?

उः राजान्तःपुरे नियुक्त सैन्यगण।

२६७. महानसिकशब्दस्य कोऽर्थः?

२६७। महानसिकशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः प्रधानः पाचकः।

उः प्रधानः पाचकः।

२६७। 'महानसिक' शब्देर अर्थ कि?

उः प्रधान पाचक।

२६८. कीदृक् भोज्यं राजा ग्रहीतव्यम्?

२६८। कीदृक् भोज्यं राजा ग्रहीतव्यम्?

उत्तरः महानसिकैः आस्वादितं वयोधिष्ठ भुक्तं भोज्यम्।

उः महानसिकैः आस्वादितं वयोधिष्ठ भुक्तं भोज्यम्।

२६८। राजाके किरकम खाद्य परिवेशन करते हवे?

उः महानसिक कर्तृक आस्वादित ओ पक्ष्मादेर दारा आस्वादित खाद्य।

२६९. द्वितीयकक्ष्यां.....राजा कैः गृहीतः भवेत्?

२६९। द्वितीयकक्ष्यां.....राजा कैः गृहीतः भवेत्?

उत्तरः कञ्चुकैः उत्तीष्ठारिणिः नपुंसकैः गृहकर्मसु नियुक्तैः पुरुषैश्च।

उः कञ्चुकैः उत्तीष्ठारिणिः नपुंसकैः गृहकर्मसु नियुक्तैः पुरुषैश्च।

२६९। द्वितीय कक्ष्यां राजाके कारा आगत जानाबेन?

उः कञ्चुकी, उत्तीष्ठारिणी नपुंसकैः गृहकर्मसु नियुक्त पुरुषगण।

२७०. वर्षवराशब्दस्य कोऽर्थः?

२७०। वर्षवराशक्तस्य कोर्थः?

उत्तरः नपुंसकः।

उः नपूंसकः।

२७०। 'वर्षवरा' शब्देर अर्थ कि?

उः नपूंसक।

२७१. वयांसिशब्दस्य कोर्थः?

२७१। वयांसिशक्तस्य कोर्थः?

उत्तरः पक्षिणः।

उः पक्षिणः।

२७१। 'वयांसि' पदेर अर्थ कि?

उः पाति।

२७२. भोजद्रव्यस्य विशुद्धता कथं ज्ञायते?

२७२। भोजद्रव्यस्य विशुद्धता कथं ज्ञायते?

उत्तरः विषसंयुक्ते अग्निशिखा नीलवर्णा भवति, शब्दस्फोटनं जायते, विहगानां विपत्तिश्च भवति।

उः विषसंयुक्ते अग्निशिखा नीलवर्णा भवति, शब्दस्फोटनं जायते, विहगानां विपत्तिश्च भवति।

२७२। भोजद्रव्येर विशुद्धिता किभाबे जाना याय?

उः भोजद्रव्ये विषयुक्त हले अग्निशिखा नील वर्ष हय, अग्नि सरथोगे विस्फोरण हय, पाथिदेरो मृत्यु हय।

२७३. विषयुक्ता अग्निशिखा कीदृशी भवति?

२७३। विषयुक्ता अग्निशिखा कीदृशी भवति?

उत्तरः मयूरकण्ठ इव नीलतां गच्छति।

उः मयूरकण्ठ इव नीलतां गच्छति।

२७३। विषयुक्त अग्निशिखा कि रकम हय?

उः मयूरेर कण्ठेर न्याय नीलवर्ण हय।

२७४. विषमित्रेषु द्रव्येषु छाया कीदृशी भवति?

२७४। विषमित्रेषु द्रव्येषु छाया कीदृशी भवति?

उत्तरः क्षुद्रा वा वृहती वा।

उः क्षुद्रा वा वृहती वा।

२७४। विषमित्रित उत्त्वे छाया कि रकम हय?

उः अत्यधिक क्षुद्रा वा वृहत्।

२७५. विषमित्रिते रसद्रव्ये वर्णं कीदृक् भवति?

२७५। विषमित्रिते रसद्रव्ये वर्णं कीदृक् भवति?

उत्तरः नीलाराजी।

उः नीलाराजी।

२७५। विषमित्रिते रसद्रव्ये वर्णं कीदृक् भवति?

उः नीलरः।

२७६. विषमित्रितदुग्धस्य वर्णं कीदृक् भवति?

२७६। विषमित्रितदुग्धस्य वर्णं कीदृक् भवति?

उत्तरः ताप्रवर्णम्।

उः ताप्रवर्णम्।

२७६। विषमित्रिते दूधेर वर्णं किरकम हय?

उः ताप्रवर्ण।

२७७. विषमित्रितयोः मद्यतोययोः किं दृश्यते?

२७७। विषमित्रितयोः मद्यतोययोः किर दृश्यते?

उत्तरः कृष्णरेखा।

उः कृष्णरेखा।

२७८। विषमित्रिते दधिनि किं दृश्यते?

२७८। विषमित्रिते दधिनि किर दृश्यते?

उत्तरः श्यामरेखा।

उः श्यामरेखा।

२७८। विषमित्रिते दधिनि किर दृश्यते?

उः श्यामल रेखा युक्त।

२७९. विषाक्ते मधुनि किं दृश्यते?

२७९। विषाक्ते मधुनि किर दृश्यते?

उत्तरः श्वेतरेखा।

उः श्वेतरेखा।

अर्थशास्त्रम्-२१

२७९। विशाहु मधुते कि रेखा देखा याएः?

उः श्वेतदेवा।

२८०। विपस्मिन्नितानाम् आर्द्रद्रव्यनाम् अवस्था का भवति?

२८०। विपस्मिन्नितानाम् आर्द्रद्रव्यनाम् अवस्था का भवति?

उत्तरः प्रस्तानत्वम्।

उः प्रस्तानश्च।

२८०। विपस्मिन्निति आर्द्र भ्रव्येर अवस्था किरकम इयः?

उः श्वान्।

२८१। विपस्मिन्निति कठिनद्रव्यं कीटृक् भवति?

२८१। विपस्मिन्निति कठिनद्रव्यं कीटृक् भवति?

उत्तरः मृदु।

उः मृदु।

२८१। विपस्मिन्निति कठिन भ्रव्ये क्रमन इयः?

उः मृदु।

२८२। विपस्मिन्निति मृदुद्रव्यं कीटृक् भवति?

२८२। विपस्मिन्निति मृदुद्रव्यं कीटृक् भवति?

उत्तरः कठिनम्।

उः कठिनम्।

२८२। विपस्मिन्निति मृदुद्रव्यं क्रमन इयः?

उः कठिन।

२८३। विपप्रभावे सञ्चरणशीलानां कीटपतङ्गादीनाम् अवस्था का भवति?

२८३। विपप्रभावे नष्टुरणशीलानां कीटपतङ्गादीनाम् अवस्था का भवति?

उत्तरः ते मृताः भवन्ति।

उः ते मृताः भवन्ति।

२८३। विपप्रभावे नष्टुरणशील कीटपतङ्गादीनाम् अवस्था क्रमन इयः?

उः मृदु।

२८४। राजा कीटृक् औपधं गृहीयात्?

२८४। राजा कीटृक् ऐवदृशं गृहीयात्?

उत्तरः वैद्यैः आस्वादविशुद्धम् औपधम् गृहीयात्।

उः लैदेवाः आशानविशुद्धम् ऐवदृशं गृहीयात्।

२८४। राजा किरकम ऐवदृशं प्रश्न करावेन?

उः लैदेवाः राजा आशानित ऐवदृश।

२८५। परिधानार्थं राजा कीटृक् वस्त्रं गृहीयात्?

२८५। परिधानार्थं राजा कीटृक् वस्त्रं गृहीयात्?

उत्तरः शुद्धं वस्त्रम्।

उः शुद्धं वस्त्रम्।

२८६। राजा कीटृक् कुशीलवकर्म अनुसरेत्?

२८६। राजा कीटृक् कुशीलवकर्म अनुसरेत्?

उत्तरः शस्त्राग्निरसन्तीडावर्ज्यम् अनुष्ठानम्।

उः शस्त्राग्निरसन्तीडावर्ज्यम् अनुष्ठानम्।

२८७। राजा किरकम अनुष्ठाने यावेन?

उः वे अनुष्ठाने अस्त्र, विष, अधि प्रज्ञति थाकवे न।

२८७। आतोद्यशब्दस्य कोऽर्थः?

२८७। आतोद्यशब्दस्य कोऽर्थः?

उत्तरः वाद्ययन्त्रम्।

उः वाद्ययन्त्रम्।

२८७। 'आतोद्य' कथात् अर्थ कि?

उः वाद्ययन्त्र।

२८८। राजा कीटृक् यानम् आरोहेत्?

२८८। राजा कीटृक् यानम् आरोहेत्?

उत्तरः मौलपुरुषाधिष्ठितं यानम्।

उः मौलपुरुषाधिष्ठितं यानम्।

२८८। राजा किरकम यानवाशने आरोहने करावेन?

उः शुद्धक् ओविष्ट यात्रिथि वाहित याने।

२८९। राजा कीटृक् नैयानम् आरोहेत्?

२८९। राजा कीटृक् नैयानम् आरोहेत्?

उत्तरः आसनाविकाधिष्ठतम्।

उः आसनाविकाधिष्ठतम्।

- ২৮৯। রাজা কি রকম নৌযানে চলাচল করবেন ?
উঃ আগুনবিক চালিত নৌযানে।
- ২৯০। রাজা কীদৃশং নৌযানম ন আরোহেত ?
- ২৯০। রাজা কীদৃশং নৌযানং ন আরোহে ?
- উত্তর: অন্য নৌ প্রতিবেদ্ধ বাতবেগচালিত নৌযানম।
উঃ অন্য নৌ প্রতিবেদ্ধ বাতবেগচালিত নৌযানম।
- ২৯১। রাজা কি রকম নৌযানে আরোহন করবেন না ?
উঃ অন্য নৌকায় বাষ্প কিংবা বায়ু বেগে চালিত নৌযানে।
- ২৯১। রাজা কস্মিন् জলাশয়ে অবগাহেত ?
- উত্তর: মত্স্যগ্রাহবিশুদ্ধং জলাশয়ে ;
উঃ মৎস্যগ্রাহবিশুদ্ধং জলাশয়ে।
- ২৯১। রাজা কি রকম জলাশয়ে জ্ঞান করবেন ?
উঃ কূমীর প্রক্রিয়া হিংস্য জলচর প্রাণীমুক্ত জলাশয়ে।
- ২৯২। রাজা সিদ্ধতাপসং কথং পঃযেত ?
- ২৯২। রাজা সিদ্ধতাপসং কথং পঃযে ?
উত্তর: আস্তশ্বর্গাহাধিষ্ঠিতঃ সন্ত রাজা সিদ্ধতাপসং পঃযেত।
উঃ আগুণ্ডুগ্রাহাধিষ্ঠিতঃ সন্ত রাজা সিদ্ধতাপসং পঃযে ?
- ২৯২। রাজা সিদ্ধতাপসদের সাথে কিভাবে দর্শন করবেন ?
উঃ অতি বিশ্বল শঙ্খধারী পুরুষবেষ্টিত হয়ে।
- ২৯৩। রাজা কথং মৃগযাং গচ্ছেত ?
- ২৯৩। রাজা কথং মৃগয়াং গচ্ছে ?
উত্তর: চললক্ষ্যপরিচয়ার্থ রাজা মৃগযাং গচ্ছেত।
উঃ চললক্ষ্যপরিচয়ার্থ রাজা মৃগয়াং গচ্ছে।
- ২৯৩। রাজা কেন মৃগয়া করবেন ?
উঃ ধাবমান প্রাণীতে লক্ষ্য স্থির করার জন্য।
- ২৯৪। কীদৃশীং অরণ্যে রাজা মৃগয়া কুর্যাত ?
- ২৯৪। কীদৃশীং অরণ্যে রাজা মৃগয়া কুর্যাং ?
উত্তর: তস্করহিংসজন্তুবিমুক্ত অরণ্যে রাজা মৃগয়া কুর্যাত।
উঃ তস্করহিংসজন্তুবিমুক্ত অরণ্যে রাজা মৃগয়া কুর্যাং।

- ২৯৪। রাজা কিরকম অরণ্যে মৃগয়া করবেন ?
উঃ তস্কর এবং হিংসজন্তু বিমুক্ত অরণ্যে।
- ২৯৫। সামন্তদৌতঃ সহ রাজা কথং মিলিষ্যতি ?
২৯৫। সামন্তদৌতঃ সহ রাজা কথং মিলিষ্যতি ?
উত্তর: মন্ত্রিপরিষদা সহ রাজা সামন্তদূতং পঃযেত।
উঃ মন্ত্রিপরিষদা সহ রাজা সামন্তদূতং পঃযে ?
- ২৯৫। সামন্তদূতগণের সাথে রাজা কিভাবে দেখা করবেন ?
উঃ মন্ত্রিপরিষদের সাথে।
- ২৯৬। রাজা কথম অনীকং গচ্ছেত ?
- ২৯৬। রাজা কথম অনীকং গচ্ছে ?
উত্তর: যুদ্ধসঞ্চয়া সজ্জিতঃ হস্তী—অশ্ব—রথারুদ্ধঃ রাজা অনীকং গচ্ছেত।
উঃ যুদ্ধসঞ্চয়া সজ্জিত হয়ে, হস্তী, অশ্ব বা রথে আরোহন করে।
- ২৯৬। রাজা কিভাবে যুদ্ধক্ষেত্রে যাবেন ?
উঃ যুদ্ধসঞ্চয়া সজ্জিত হয়ে, হস্তী, অশ্ব বা রথে আরোহন করে।
- ২৯৭। রাজা: নির্যাণাভিযানমার্পাঃ কীদৃশঃ ভবেৎ ?
- ২৯৭। রাজ্ঞঃ নির্যাণাভিযানমার্পঃ কীদৃশঃ ভবেৎ ?
উত্তর: শাস্ত্রিভিঃ দণ্ডভিশ্ব রাজ্ঞঃ নির্যাণাভিযানমার্পঃ সুরক্ষিতঃ ভবেত।
উঃ শাস্ত্রিভিঃ দণ্ডভিশ্ব রাজ্ঞঃ নির্যাণাভিযানমার্পঃ সুরক্ষিতঃ ভবেৎ।
- ২৯৭। রাজাৰ গমনাগমন পথ কিরকম হবে ?
উঃ শঙ্খধারী ও দণ্ডধারী-রাজপুরুষদের দ্বারা সুরক্ষিত।
- ২৯৮। রাজা কুত্র ন একাকী অবগচ্ছেত ?
২৯৮। রাজা কুত্র ন একাকী অবগচ্ছে ?
উত্তর: জনবহুলক্ষেত্রে রাজা একাকী ন অবগচ্ছেত।
উঃ জনবহুলক্ষেত্রে রাজা একাকী ন অবগচ্ছে।
- ২৯৮। রাজা কোথায় একাকী যাবেন না ?
উঃ জনবহুল স্থানে।
- ২৯৯। যাত্রাসমাজোৎসবেষু রাজা কথং গচ্ছেত ?
২৯৯। যাত্রাসমাজোৎসবেষু রাজা কথং গচ্ছে ?
উত্তর: দশবর্গিকসৈন্যাধিষ্ঠিতঃ রাজা যাত্রাসমাজোৎসবেষু গচ্ছেত।
উঃ দশবর্গিকসৈন্যাধিষ্ঠিতঃ রাজা যাত্রাসমাজোৎসবেষু গচ্ছে।

२९९। याता प्रङ्गति सामाजिक उत्सवे राजा किभावे याबेन ?

उः दशवर्षिक सेन्य अधिष्ठित हये ।

३००. राष्ट्रशासनस्य उपायचतुष्टयं किमस्ति ?

३००। राष्ट्रशासनस्य उपायचतुष्टयं किमस्ति ?

उत्तरः साम—दान—भेद—दण्डक्षेति ।

उः साम-दान-भेद-दण्डक्षेति ।

३००। राष्ट्रशासनेर उपाय चाराति कि कि ?

उः साम, दान, भेद ओ दण्ड ।

३०१. सामोपायः कः अस्ति ?

उत्तरः विद्रोहदमणे आलापालोचना ।

उः विद्रोहदमने आलापालोचना ।

३०१। साम कि ?

उः विद्रोह दमने आलाप-आलोचना ।

३०२. भेदोपायः कः अस्ति ?

उत्तरः अतुष्टेषु विभाजनम् ।

उः अतुष्टेषु विभाजनम् ।

३०२। भेद कि ?

उः अतुष्टेदेर मध्ये विभाजन आनयन ।

३०३. चरमः उपायः कोऽस्ति ?

३०३। चरमः उपायः कोऽस्ति ?

उत्तरः दण्डः ।

उः दण्डः ।

३०३। चरम उपाय कि ?

उः दण्ड ।

३०४. शासनं नाम किमस्ति ?

३०४। शासनं नाम किमस्ति ?

उत्तरः लिखितकार्यार्थं तालपत्रादिशासनम् ।

उः लिखितकार्यार्थं तालपत्रादिशासनम् ।

३०४। 'शासन' कथाव अर्थ कि ?

उः भूर्ज या तालपत्रादिते राजाव लिखित आदेश ।

३०५. शासनं केन प्रेषितं भवति ?

३०५। शासनं केन प्रेषितं भवति ?

उत्तरः शासनहर इति दूतेन ।

उः शासनहर इति दूतेन ।

३०५। शासन के बहन करावेन ?

उः शासनहर नामक दूत

३०६. सामोपायः कतिविधः भवति ?

३०६। सामोपायः कतिविधः भवति ?

उत्तरः पञ्चविधः । गुणसङ्कृतेनम्, सम्बन्धोपत्यानम्, परस्परोपकारसन्दर्शनम्, आयतिप्रदर्शनम्, आत्मोपनिधानञ्च ।

उः पञ्चविधः । गुणसङ्कृतेनम्, सम्बन्धोपत्यानम्, परस्परोपकारसन्दर्शनम्, आयतिप्रदर्शनम्, आत्मोपनिधानञ्च ।

३०६। साम कतप्रकारेव हय ?

उः पांच प्रकारेव — गुणसङ्कृतेन, सम्बन्धोपत्यान, परस्परोपकार सन्दर्शन, आयति प्रदर्शन ओ आत्मोपनिधान ।

३०७. दण्डः कतिविधः भवति ?

३०७। दण्डः कतिविधः भवति ?

उत्तरः त्रिविधः—वधः वन्धनम् अर्थापहरणञ्च ।

उः त्रिविधः—वधः वन्धनम् अर्थापहरणञ्च ।

३०८। दण्ड कत प्रकारेव ओ कि कि ?

उः तिन प्रकारेव — वध, वन्धन ओ अर्थापहरण ।

३०८. घाडगृण्यं किमस्ति ?

३०८। घाडगृण्यं किमस्ति ?

उत्तरः सन्धि—विग्रह—यान—आसन—द्वैधीभाव—संश्रयश्चेति ।

उः सन्धि-विग्रह-यान-आसन-द्वैधीभाव-संश्रयश्चेति ।

३०८। घाडगृण्य कि कि ?

उः सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव ओ संश्रय ।

३०९. घाडगृण्ये के तावत् गुणे शासनाधीनौ ?

- ३०९। वाड्गुण्डेषु के तावृ गुणे शासनाधीनों ?
उत्तरः सन्धिविग्रहश्च ।
उः सन्धिविग्रहश्च ।
- ३१०। वाड्गुण्डेर कोन् कोन् गुण शासनाधीन ?
उः सन्धि ओ विग्रह ।
- ३१०। राजलेखे के च विषयाः उल्लेखनीयाः ?
३१०। राजलेखे के च विषयाः उल्लेखनीयाः ?
उत्तरः देशीश्वर्यवंशनामधेयाः उल्लेखनीयाः ।
उः देशीश्वर्यवंशनामधेयाः उल्लेखनीयाः ।
- ३१०। शासने कोन् कोन् विषय उल्लिखित हय ?
उः देश, श्रेष्ठ्य, वर्ष, नाम प्रभृति ।
- ३११। शासनरचनायां पत्रलेखकेन किं विचारणीयम् ?
३११। शासनरचनायां पत्रलेखकेन किं विचारणीयम् ?
उत्तरः जारिं कुलं स्थानवयः श्रुतानि
कर्मदिर्शीलान्वय देशकालौ ।
यौनानुवर्क्षं च समीक्ष्य कार्ये
लेखं विदध्यात् पुरुषानुरूपम् ।
उः जातिं कुलं स्थानवयः श्रुतानि
कर्मदिर्शीलान्वय देशकालौ ।
यौनानुवर्क्षं च समीक्ष्य कार्ये
लेखं विदध्यात् पुरुषानुरूपम् ।
- ३११। शासने पत्रप्रेरकेर कोन् कोन् विषय विचार्य ?
उः जाति, कुल, स्थान, वर्ष, शास्त्रज्ञान, कर्मकुशलता, देश, काल, योनसम्बन्ध प्रभृति ।
३१२. किं तावत् लेखसम्पत् ?
३१२. किं तावत् लेखसम्पत् ?
उत्तरः अर्थक्रमः सम्बन्धः परिपूर्णता माधुर्यं सौन्दर्यं स्पष्टत्वज्ञ लेख सम्पत् ।
उः अर्थक्रमः सम्बन्धः परिपूर्णता माधुर्यं सौन्दर्यं स्पष्टत्वज्ञ लेख सम्पत् ।
- ३१२। लेख सम्पद कि कि ?
उः अर्थक्रमः सम्बन्ध, परिपूर्णता, माधुर्य, उदार्य ओ स्पष्टता ।

३१३. अर्थक्रमः कः भवति ?
३१३। अर्थक्रमः कः भवति ?
उत्तरः पदाक्षराणां न्यूनताम् अतिरिक्तां परिहाय हेतुदाहरणदृष्टान्तयोगेन अर्थप्रकाशः
अर्थक्रमः ।
- उः पदाक्षराणां न्यूनताम् अतिरिक्तां परिहाय हेतुदाहरणदृष्टान्तयोगेन
अर्थप्रकाशः अर्थक्रमः ।
- ३१४। 'अर्थक्रम' कि ?
उत्तरः पदाक्षर के न्यूनता ओ अतिरिक्तता वर्जन करे हेतु, उदाहरण ओ
दृष्टान्तयोगे अर्थप्रकाश ।
- ३१४। माधुर्यं किम् ?
३१४। माधुर्यं किम् ?
उत्तरः सुखोपनीतचार्वर्थशब्दाभिधानम् औदार्यम् ।
उः सुखोपनीतचार्वर्थशब्दाभिधानम् औदार्यम् ।
- ३१५। माधुर्यं कि ?
उत्तरः अग्राम्यशब्दाभिधानम् औदार्यम् ।
उः अग्राम्यशब्दाभिधानम् औदार्यम् ।
- ३१५। औदार्यं किम् ?
उत्तरः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
उः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
३१६. स्पष्टत्वं किम् ?
३१६। स्पष्टत्वं किम् ?
उत्तरः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
उः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
- ३१६। स्पष्टत्वं कि ?
उत्तरः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
उः प्रतीतशब्दप्रयोगः स्पष्टत्वम् ।
३१७. वर्णाः कतिसंख्यकाः ?
३१७। वर्णाः कतिसंख्यकाः ?
उत्तरः त्रिष्टीसंख्यकाः ।